पूज्य आचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा. के
जन्म-शताब्दी-महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रकाशित

●

श्रीमद् जवाहराचार्य
समाज

●

लेखक
ओंकार पारीक

●

प्रकाशक
श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर

श्रीमद् जवाहराचार्य सुगम पुस्तकमाला–३

● संयोजक-सम्पादक

डॉ० नरेन्द्र भानावत

● लेखक

ओंकार पारीक

● प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ,
समता भवन, रामपुरिया मार्ग,
बीकानेर (राजस्थान)

● प्रथम संस्करण १९७६ (११०० प्रतियां)

● मूल्य दो रुपया

मुद्रक—फ्रैण्ड्स् प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, जयपुर-३

प्रकाशकीय निवेदन

यह बडा सुखद सयोग है कि भगवान् महावीर के २५वे निर्वाण शताब्दी समारोह के समापन के साथ ही उन्ही के धर्मशासन के इस युग के महान् क्रातिकारी युग-पुरुष श्रीमद् जवाहराचार्य का जन्म शताब्दी-समारोह मनाने का हमे सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

आचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा का जन्म स १६३२ मे कार्तिक शुक्ला चतुर्थी को थादला (म प्र) मे हुआ था। १६ वर्ष की अवस्था मे आपने जैन भागवती दीक्षा अगीकृत की और स १६७७ मे आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। स २००० मे आषाढ शुक्ला अष्टमी को भीनासर (बीकानेर) मे आपका स्वर्गवास हुआ।

आचार्य श्री का व्यक्तित्व बडा आकर्षक और प्रभावशाली था। आपकी दृष्टि बडी उदार तथा विचार विश्वमैत्रीभाव व राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत थे। आपने राष्ट्रीय स्वतन्त्रता-आन्दोलन के सत्याग्रह, अहिंसक प्रतिरोध, खादीधारण, गोपालन, अछूतोद्धार, व्यसनमुक्ति जैसे रचनात्मक कार्यक्रमो मे सहयोग देने की जनमानस को प्रेरणा दी और दहेजप्रथा, बालविवाह, वृद्धविवाह, मृत्युभोज, सूदखोरी जैसी कुप्रथाओ के खिलाफ

लोकमानस को जागृत किया। आपके राष्ट्रधर्मी क्रान्तद्रष्टा व्यक्तित्व से प्रभावित होकर राष्ट्रपिता महात्मा गाधी, लोकमान्य तिलक, प. मदनमोहन मालवीय, सरदार पटेल आदि राष्ट्रनेता आपके सम्पर्क मे आये।

आप प्रखर वक्ता और असाधारण वाग्मी महापुरुष थे। 'जवाहर किरणावली' नाम से कई भागो मे प्रकाशित आपका प्रेरणादायी विशाल साहित्य राष्ट्र की अमूल्य निधि है। वह ओज, शक्ति और सस्कार-निर्माण का जीवन्त साहित्य है। इस साहित्य से प्रेरणा पाकर हजारो लोगो ने अपने जीवन का उत्थान किया है। ऐसे महान् ज्योतिर्धर आचार्य का साहित्य केवल जैन समाज की ही सम्पत्ति नही है, उसे विश्व-मानव तक पहुँचाना हमारा पुनीत कर्तव्य है।

इसी भावना से प्रेरित होकर जन्म-शताब्दी-वर्ष मे हमने आचार्य श्री की प्रेरणादायी जीवनी तथा धर्म, समाज, राष्ट्रीयता, शिक्षा, नारी-जागरण जैसे महत्त्वपूर्ण विषयो पर प्रकट किये गये, उनके विचारो को सुगम पुस्तकमाला के रूप मे जन-जन तक पहुचाने का निर्णय लिया है।। प्रस्तुत पुस्तक उसी योजना का एक अग है। इसी योजना के अन्तर्गत अन्य भाषाओ मे भी कतिपय पुस्तको का प्रकाशन विचाराधीन है।

इस प्रकाशन-योजना को मूर्तरूप देने हेतु अखिल भारतीय स्तर पर सघ के अधीन गत वर्ष "श्री जवाहर साहित्य

प्रकाशन निधि'' स्थापित करने का निर्णय किया गया था। निर्णय के क्रियान्वयन मे श्रीयुत् जुगराज जी ना घोका, मद्रास की प्रेरणा एव सक्रिय सहयोग विशेष उल्लेखनीय एव उपयोगी रहे। सघ इसके लिए उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता है।

इस योजना की क्रियान्विति मे योजना के सयोजक-सपादक डॉ० नरेन्द्र भानावत व अन्य विद्वान् लेखको का जो आत्मीयतापूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है, उसके लिए हम उनके हृदय से आभारी हैं।

आशा है, यह सुगम पुस्तकमाला पाठको के चरित्र-निर्माण एव वैचारिक उन्नयन मे विशेष प्रेरक सिद्ध होगी।

गुमानमल चोरड़िया	भवरलाल कोठारी
अध्यक्ष	मन्त्री

श्री अ० भा० साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर

संयोजकीय वक्तव्य

भारतीय धर्म और दर्शन के इतिहास का यह एक रोचक तथ्य है कि जैन-परम्परा अविच्छिन्न रूप मे अद्यावधि चली आ रही है। इसी गौरवमयी परम्परा मे आज से १०० वर्ष पूर्व सयम, साधना एव ज्ञानज्योति को प्रज्वलित करने वाले युग-प्रवर्तक क्रान्तदर्शी आचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा का जन्म हुआ। आपने धर्म को आत्मा का प्रकृत स्वभाव माना और आत्मकल्याण के साथ-साथ लोक-कल्याण व स्वस्थ समाज रचना का बुनियादी आधार मानते हुए युगीन सन्दर्भो मे उसे व्याख्यायित किया इससे धर्म का तेजस्वी रूप प्रकट हुआ और समाज तथा राष्ट्र को समानता तथा स्वतन्त्रता के पुनीत पथ पर निरन्तर आगे बढते रहने की प्रेरणा मिली।

यह बडी प्रसन्नता की बात है कि ऐसे महान् प्रतापी ज्योतिर्धर आचार्य का 'जन्म-शताब्दी महोत्सव' अखिल भारतीय स्तर पर तप, त्यागपूवक मनाया जा रहा है और इस उपलक्ष्य मे श्री अ० भा० साधुमार्गी जैन सघ ने आचार्य श्री के जीवन-प्रसगो और उपदेशो से सर्वसाधारण को परिचित कराने के लिए 'श्रीमद् जवाहराचार्य सुगम पुस्तकमाला' योजना के अन्तर्गत कतिपय पुस्तकें प्रकाशित करने का निश्चय किया

है। इसी योजना के अन्तर्गत यह पुस्तक पाठको के कर-कमलो मे सौपते हुए हमे आनन्द की अनुभूति हो रही है।

इस पुस्तक के लेखक श्री ओकार पारीक राजस्थान के लोकधर्मी प्रगतिशील चेतना के कवि, जागरूक पत्रकार और प्रखर चिन्तक हैं। उनकी भाषा मे लोकगध और ताजापन तथा शैली मे ओजस्विता-तेजस्विता है। हमारे निवेदन पर उन्होने यह पुस्तक लिखना स्वीकार किया, जो स्वय मे श्रीमद् जवाहराचार्य के प्रति उनकी श्रद्धा का प्रतीक है। अत्यन्त व्यस्त रहते हुए भी श्री पारीक ने आचार्य श्री के समग्र साहित्य का आलोडन-विलोडन कर समाज क्रातिदर्शन के रूप मे यह लोकभोग्यनवनीत प्रस्तुत किया है। आशा है, इसके आस्वाद-आचरण मे समाज को स्निग्ध-पुष्ट स्वस्थता और नई ताजगी प्राप्त हो सकेगी। इसी विश्वास के साथ—

नरेन्द्र भानावत
सयोजक—सम्पादक
श्रीमद् जवाहराचार्य सुगम पुस्तकमाला

१८ सितम्बर, ७६
जयपुर (राज)

थी, शास्त्रों के निष्णात पण्डित, कुशल [illegible] और [illegible]
युग भारत की परिपूर्ति थे आचार्य श्री जवाहर।

आचार्य श्री ने जीवन भर भारतीय समाज का मानस झकझोरा। वे उच्च कोटि के राष्ट्रभक्त थे। स्वदेशी आन्दोलन का उन्होंने अपने प्रवचनों में, गोरी सत्ता से बेखौफ रहकर, केवल मौखिक समर्थन ही नहीं किया बल्कि आपने अपने शिष्यों व भक्तों को खादी पहनने के प्रति प्रेरित किया व आजादी के लिए सर्वस्व अर्पण करने की अभिप्रेरणा समाज को दी।

आचार्य श्री के प्रति भारतीय समाज सदा आभारी रहेगा, कारण वे वस्तुत धर्म के मर्म को भारतीय आत्मा की गहराई तक ले जाने मे सफल हुए। आचार्य श्री—अंध-विश्वास, रूढि-परम्परा तथा जडता मूलक सामाजिक प्रथाओ, प्रणालियो, व्यवहारो, रीतिरिवाजो व विचारधाराओ का प्रबल विरोध किया करते थे।

यदि कहू कि श्रीमद् जवाहराचार्य के जीवन मे समाज-क्रांति प्रणेता महर्षि दयानन्द तथा आध्यात्मिक जागरण के विश्वनेता स्वामी विवेकानन्द—दोनो युग विभूतियो का युगान्तर-कारी एकीकरण, समन्वयीकरण, जवाहरीकरण हुआ है, तो इसे अत्युक्ति नही कहा जाएगा।

जीवन-साहित्य सृजेता ·

विक्रम सम्वत् १६४६ से १६६६—अर्द्ध शताब्दि

पर्यन्त भारत मे एक साधु-पुरुष मारवाड से महाराष्ट्र और देहली से लेकर बम्बई तक ५१ चातुर्मासो का धर्म-चक्र प्रवर्तित करता हुआ चलता रहा, सदा चलता रहा...... पगपग पर प्रेरणास्पद प्रवचन पगपग पर समाज सचेतना का—लोकोपकारी प्रतिबोध-प्रयोग ! आचार्य श्री जवाहर ने जो कुछ कहा—वह श्रमण सस्कृति का युग-अभिवचन सिद्ध हुआ । किसान बीज बोता है और साधु अक्षर ! अक्षर उगते है, साहित्य सरजना होती है । बीज उगता है आदमी जीवन धारता है । साधु आगे बढता है । वह जीवन को गतिशील करता है—अपने युग-साहित्य को प्रगतिशील ! हर युग की अपनी गति होती है, प्रगति होती है और उसकी जैविक गत्यात्मकता भी अनुपम होती है, ऊर्जस्विता ।

मैंने आचार्य प्रवर का साहित्यानुशीलन कर एक तत्त्व पाया—वह तत्त्व है—जीवन की जैविक शक्ति का ! हाँ, जीवन का भी जीवन होता है । उसकी जिजीविषा के सरक्षक—पालक—पोषक होते हैं सत और कलाकार ! आचार्य प्रवर जीवन साहित्य सृजेता थे । जीव हिंसा से दुखित होकर उनका मन, प्राण जब आसुओ मे घुल-धुल जाता था अपने जमाने मे, तब काल के पाव भारी पडते थे । विधवाओ की वेदना, बाल विवाह की कचोट, धार्मिक आडम्बरो की दु खमय स्थिति, विदेशी सस्कृति की मोहाधता, फैशनपरस्ती तथा नारी जाति

[illegible]

आचार्य श्री [illegible]
और साहित्य [illegible]
देखने में [illegible]
[illegible] । दुर्भाग्य [illegible]
[illegible] तो........ [illegible] । आचार्य
प्रवर का साहित्य [illegible]
लिए हुए है । उनके मोरवी, अहमदनगर, बीकानेर, जामनगर,
उदयपुर राजकोट, रतलाम, जावरा, इन्दौर तथा घाटकोपर
के प्रवचन-साहित्य को एक साथ यदि हम अध्ययन कर देखें
तो हमे आचार्यश्री का सात्विक समाज-दर्शन सम्यक् रूपेण
समझ मे आता है ।

आचार्य श्री का समाज-दर्शन .

आचार्य प्रवर के सपनो का आदर्श-समाज भारत मे
स्थापित होकर रहेगा । उन्होने अपने जीवनकाल मे समतावादी
समाजवाद की जो युगपरिकल्पना की थी, उसे आज हम यदि
आर्थिक स्वराज्य व स्वावलम्बन की वर्तमान लोक मुहीम से
जोडकर देखें तो हमे लगेगा कि आचार्य श्रीमद् जवाहर भारतीय
समाजवाद के अग्रेसर लोक-पुरुष है ।

आपने अपने रूढ़िचुस्त समाज की परवाह न कर उदयपुर चातुर्मास काल में सम्वत् १९९० में फरमाया—

"मेहतरानी गटर साफ करती है और नगर की जनता को रोगों से बचाती है। वह नगर की जनता के प्राणों की रक्षिका है। उसकी सेवा अत्यन्त उपयोगी और अनुपम है। फिर भी घरवाली को बड़ी समझना और मुकाबिले में मेहतरानी को नीच मानना भूल है, अज्ञान है, कृतज्ञता के विरुद्ध है।"

इस सुधारवादी कथन को प्रस्तुत कर मैं चाहूंगा कि विज्ञ पाठक भारतीय समाज में व्याप्त ऊँच-नीच की मत-भेद भरी धारणाओं के परिप्रेक्ष्य में लोकमान्य तिलक, गोखले, गांधी, नेहरू, ठक्कर बापा, विनोबा और लोकनेत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के युग-प्रबोध को आचार्य प्रवर की मार्मिक संवेदना से जोड़कर देखें तो उस समाजवाद की तस्वीर नजर आएगी जिसकी स्थापना की ओर पूरा भारत प्राण-प्रण से लगा है।

आचार्य श्री कहा करते थे— धनपतियों से—कि अपनी सम्पत्ति के ट्रस्टी बनो। ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त गांधीजी ने प्रवर्तित किया। इस बात से यह सिद्ध होता है कि वे पूंजीवादी एकाधिकारवाद के कभी पक्ष में नहीं रहे।

[illegible]

[illegible] आता है।

संघ एकता की ओर

महापुरुषों का जीवन लोक-जीवन [illegible] करता है। आचार्य प्रवर ने सन् १९३१ में दिल्ली में आयोजित साधु सम्मेलन के अवसर पर यह महसूस किया कि निर्ग्रन्थ

की स्थिति कुछ विषम हो रही है । साधु-साध्वी-समाज मे व्याप्त निरकुशता पर नियत्रण रखना उस समय जरूरी था । पूज्य श्री ने गम्भीर आत्म चिन्तन कर यह निश्चय किया कि साधु-समाज के हाथ मे सामाजिक सुधार का कार्य रहने से चारित्र मे न्यूनता आ जाएगी अत उन्होने इस कार्य का दायित्व श्रावको के तृतीय वर्ग (ब्रह्मचारी वर्ग) पर डालना उचित समझा और इसकी क्रातिकारी योजना समाज को प्रस्तुत की जो आज 'वीर सघ योजना' के रूप मे युगीन मान-मूल्यो सहित प्रवर्तित है । साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका इन चारो वर्गों के पाये पर सघ टिका है । पूज्य श्री की सघ-एकता का यह चिरन्तन प्रयास, नि सन्देह एक समाज-धार्मिक क्राति का ही एक युगोन्मेष था । इसका महत्त्व जब तक सघ है तब तक अमिट रहेगा ।

पूज्य श्री ने साधु-श्रावक समाज की लोक-मर्यादाओ पर कड़ा आचार्यानुशासन रखा व समय-समय पर न केवल उन्हें सचेत किया बल्कि सवेदित भी ।

न केवल जैन एकता के ही वे हामी थे बल्कि उनका क्रातिकारी जीवन उन अनेक घटनाओ से ओतप्रोत है जहा जैनेतर समाज के विग्रह उन्होने शात कराए । हजारो की सख्या मे, बड़े-बड़े दीवानो, राजपुरुषो, श्रीमन्तो तथा आम आदिवासी, पिछड़े वर्ग के कर्मकार, दलित हरिजन, मछुहारे,

कसाई और कलाल जातियो के लोगो ने मास, मदिरा, जुआ, कन्या विक्रय, दहेज तथा जीव हिंसा जन्य कुप्रवृतियो को सदा-सदा के लिए तिलाजलि देकर अपना जीवनोद्धार किया। महापुरुषो का जीवन लोक-सघी होता है। वे लोकधर्मी होते है।

पूज्य श्री के जीवन को वहुआयामी रूप मे हम पाते है। आचार्य-पदीय धार्मिक मर्यादा मे रहते हुए भी वे अपने युग-समाज के सदा हमदर्द रहे। महात्मा गाधी का स्वदेशी आदोलन, लोकमान्य तिलक का भारत-ज्ञान, सेनापति वापट का लोक त्याग, सेठ जमनालालजी वजाज की धार्मिक सहिष्णुता, सरदार पटेल की दृढ निश्चियात्मकता तथा ठक्कर वापा की सेवा परायणता—सबका मार तत्व हम यदि किसी एक पुरुष चरित्र मे देखना चाहे तो आचार्य श्री की प्रज्ञा व प्रतिभा को हम अप्रतिम लोक-सगम के रूप मे पाते हैं।

असख्यो वनवासियो के बीच जैसे सिंह अकेला ही विचरता है, वैसे ही भक्त-समुदाय के मध्य साधु। निस्पृही, नि सगी, निर्ग्रन्थी, निर्मानमोही होता है आचार्य।

सात्विक धार्मिकता की ओर

वैज्ञानिक रेडियोधर्मिता की बात करते है और साधु-आचार्य नैतिक धार्मिकता की। समाज का जीवन लोक रूपी प्रयोगशाला मे अपना सत्य-तथ्य ग्रहण करता है। मानव

जीवन सुखी है तो विज्ञान सुखी है, साहित्य समृद्ध और सस्कृति सम्पन्न है। मानव को कुंठित कर सभ्यता फलफूल नही सकती।

आचार्य श्रीमद् जवाहराचार्य के साहित्य का सन्देश है, एक कथन मे—

"लोग अपनी-अपनी जातियो के सुधार के लिए कानून बनाते हैं, जातीय सभाओ मे प्रस्ताव पास करते हैं, लेकिन हृदय मे जब तक हराम आराम से बैठा है तब तक उनसे क्या होना जाना है............लोगो के दिल से हराम नही गया है। उसके निकले बिना व्यक्तियो का सुधार नही हो सकता, और व्यक्तियो के सुधार के अभाव मे समाज सुधार का अर्थ ही क्या है ?"

याद होगा पाठको को पडित नेहरू का कथन—'आराम हराम है।' यह सही है कि आज भी हराम हमारे दिल से निकला नही है। यह निकले तो समाजवाद आये।

थोडे मे, आचार्य श्री का यही मूल समाज दर्शन है।

'श्रीमद् जवाहराचार्य समाज' कृति की अतरात्मा मे—पूज्य आचार्य श्री जवाहर की युगवाणी का सारसत्त्व और लोक-मूल्य-अकन कहा तक मेरी लेखनी से हुआ है—इसके परीक्षक हैं पाठक और साधक।

आचार्य श्री के प्रवचन साहित्य के परिदृश्य मे कल

ग्रौर ग्राज की युगध्वनियो की समवेत—एकरसता ने मेरे ग्रन्त करण को गहरे मे प्रभावित किया है।

मैं ग्रपने सरलमना विद्वान मित्र डॉ० नरेन्द्र भानावत का हृदय से ग्राभारी हू कि जिन्होने मुझे ग्राचार्य प्रवर श्री जवाहरलालजी म० सा० पर यह कृति प्रस्तुत करने का शुभ ग्रवसर प्रदान किया।

सहज रूप मे मैं कृतज्ञ हू भाई भवर कोठारी के प्रति जिन्होने इस कृति के प्रकाशन की त्वरा प्रदर्शित कर सत्साहित्य के प्रसारण का पथ प्रशस्त किया है।

—ओंकार पारीक

अनुक्रमणिका

परिशिष्ट

श्रीमद् जवाहराचार्य
समाज

१

आचार्य देवो भव:

टॉमस कार्लाइल ने कहा है— "मानव समाज की अंधकार पूर्ण यात्रा में महापुरुष प्रकाश स्तम्भ हैं। वे नक्षत्रों के समान चमकते रहते हैं, बीती हुई घटनाओं के साक्षी हैं, भविष्य में प्रकट होने वाली बातों के लिए भविष्य सूचक चिह्न हैं तथा मानव-प्रकृति की मूर्तिमती सम्भावनायें हैं।"

मानव समाज समुद्रवत् है। वह मर्यादाधनी है। वह अपनी समग्र सामाजिक इयत्ता और लोक-सत्ता नदियों से सार्वभौम अनुशासन के रूप में बनाए हुए है। समाज की समग्रता, उसकी अंत.करणीय एकाग्रता और एकता का अनुशीलन, नियमन, परिसीमन तथा अभिव्यक्तिकरण का गुरुतर दायित्व समाज के लोकनायक आचार्यों का होता है। आचार्यों की भारतीय परम्परा का उत्स और उत्कर्ष यही रहा है कि उनका ज्ञान, दर्शन और चारित्र्य समाज के लिए सदा सर्वदा दिशाबोधक सिद्ध हो, लोग भटक भी जाय तो सही समय में ठिकाने

[illegible]
[illegible]
नहीं है।

[illegible] है विभिन्न धर्मों ने जिन सत्कर्मों [illegible] अहिंसा और अपरिग्रह का लोकहित [illegible] समझ रखा है उन्हीं धारणाओं के लिए उन्हें देवता मान कर, लोककंठ ने उनका अभिनन्दन किया है।

संसार का कोई धर्म-आचार्य वैर-विरोध का समर्थन नहीं करता। पर समाज-समुद्र का कोई पार नहीं। इसकी आत्मा प्रशांत है मूलत. गहराई से देखें तो।

अशान्त है तो समाज का मन और मस्तिष्क। समुद्र में ऊपर-ऊपर लहरों का प्रचण्ड आलोड़न, गर्जन तथा पारस्परिक दुर्दान्त संघर्षण होता है। यह प्रकृति-क्रम है। सबसे विशिष्टतम और विचित्रतम प्राणी है मनुष्य। यह डरता है तो चूहे से और नही डरता है तो सागर लांघ जाता है, पर्वत फाद जाता है। विज्ञान उसकी मुट्ठी मे है। ज्ञान को उसने– महा-पोथीघरो मे बंद कर रखा है। बस यही वह चूका है। ज्ञान मुक्त है। ज्ञानी सर्वतंत्र स्वतंत्र होता है। होता वह भी मनुष्य ही

हुआ। आचार्य प्रवर की दवग वाणी, उनकी अलौकिक वाग्मिता और पारमिता-प्रज्ञावती मधुमती आचार्य भूमिका ने अपने समसामयिक महापडितो, कुतर्कपथी, पल्लवग्राही, छिद्रान्वेपी कथित पोथीकोटो, ज्ञान भार-वाहियो तथा लोकभ्रमाचारियो को अपनी विद्या विनय सम्पन्न विवेकशीलता, तार्किकता तथा अपराजेय शास्त्रीय प्रामाणिकता से न केवल उन्हे दम्भरहित किया वल्कि समाज को अहिंसाजन्य युगधर्म विपयक अल्पारभ-महारभ कारी दुखद विवादो से वचाया और सही मार्ग दिखाया। समाज ऐसे आचार्यों को देवनाम धन्य मानता है, उनको याद करता है, उनको मरने नही देता। उनको आत्म अगीकार करता है। लोक महामहिमावान होता है। उसकी स्मरण व विस्मरण की शक्ति महान् होती है।

भारतीय दर्शनधारा के विचक्षण विद्वान् और भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति और अभूतपूर्व विचारक डॉ० राधाकृष्णन् ने कहा है—

"भूतल पर मानव-जीवन की कथा मे सवसे वडी घटना उसकी आधिभौतिक सफलताएँ अथवा उसके द्वारा वनाये और विगाडे हुए साम्राज्य नही, वल्कि सच्चाई और भलाई की खोज के पीछे उनकी आत्मा की,

। गया है। महर्षि दयानन्द ने अपना युग-कल्प-साध्य
। किया। आचार्य प्रवर की आत्मा का विश्व-विहार
ी जारी है। जब तक समाज अनेकता और विग्रह में
— उनका अहिंसक प्रतिरोधकर्ता कल्पजीवि धर्म
क्तित्व-धनी श्रीमद् जवाहर की सिंह-गर्जना युगों-युगों
क संसार में गूंजती रहेगी। आचार्य पद की गुरु-गरिमा
। जो महामना सदा पावनतम स्वरूपों में निस्पृह,
र्वैर और निष्पक्ष रखे रहा वही दिव्यात्मा, लोक
ाश्वात्मा रूप में इस जीवन और जगत् को सौम्य,
ाति, स्नेह, अपरिग्रह तथा शीलमय जीवन जीने का
ोज मंत्र दे रहा है।

संभवत विश्व भर में श्रीमद् जवाहराचार्य ही
प्रथम प्रवर्तक युगाचार्य हैं जिन्होंने जैन धर्म की युगीन
व्याख्या तथा विस्तृति विश्व के समक्ष प्रस्तुत की है।
महापंडित लोकमान्य तिलक सरीखे तपोधनी विद्वान् भी
'गीतारहस्य' में जैन धर्म के विषय में लिखते-लिखते चूक
गए। इस चूक को आचार्य श्री ने पकड़ा, इसको सुधारा
तथा अहमदनगर प्रवास में एक लोक-प्रवचन में जैनधर्म
की वास्तविकता का वैश्विक-विवेचन प्रस्तुत कर उन्होंने
लोकमान्य तिलक को सही मार्गदर्शन प्रदान किया।

।सल, 'गीतारहस्य' लिखते समय, लोकमान्य

तिलक ने जैन धर्म के वारे मे जो कुछ लिखा, अंग्रेजी पुस्तको के आधार से। उस जमाने मे भारतीय संस्कृति, अध्यात्म, धर्म, ज्ञान तथा आर्षग्रथो का जो अधकचरा अध्ययन अंग्रेजो ने अपनी भापा मे लिखमारा न्यूनाधिक, रूप मे आज भी हम उसको अधिकृत मानने की मानसिक दासता मे पडे हैं।

लोकमान्य ने अपने युगातरकारी 'गीतारहस्य' मे जैन धर्म को वौद्धधर्म की भाति मात्र निवृत्तिमूलक माना। उन्होने यह भी माना कि जैन धर्मान्तर्गत गृहस्थ मोक्ष भागी नही हो सकता। पूर्ण ज्ञान ससार त्याग के विना असभव है। जीवन का एक मात्र लक्ष्य ससारत्याग मुनिवृत्ति मे ही है। इस धर्म मे विधेयात्मकता व आचरणीय वाते वहुत कम अथवा नगण्य हैं।

युग वोध का पुण्य स्वर :

ज्ञाननिधान, आगम-शास्त्र अध्येता, विनयी पडित प्रवर धर्माचार्य श्री जवाहर ने लोकमान्य तिलक जैसे युगविचारक, पत्रकार, स्वातन्त्र्य सेनानी तथा 'स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, हम इसे लेकर ही रहेगे' के राष्ट्र मत्रदाता को, जैन धर्म का सार तत्त्व समझाते हुए कहा कि—जैन धर्म की प्रकृति अनासक्ति प्रधान है। अतर साधना के विना वेप मात्र मुक्ति का

कारण नही है। विषय-वीतरागी गृहस्थ मोक्षभागी होता है। मोक्ष की सहायिका है शुद्ध वृत्ति। भरत चक्रवर्ती ने कोई भेष नही धारा था, उन्हे शीश महल मे खडे-खडे केवलज्ञान हो गया था। माता मरुदेवी तथा इलायची पुत्र भी इसके ज्वलन्त प्रतीक है। चाहिए क्या-आन्तरिक आत्म भावना का प्रकर्ष। अनासक्ति के अभाव मे निवृत्ति अकर्मण्य है। कामभोगो मे मूर्च्छा, गृद्धि या आसक्ति संसार का कारण है। इसके न होने से मोक्ष होता है। सवर, निर्जरा की साधना से आत्मा नवीन कर्म-बन्धनो से बचती है, बधे कर्मो के पाश से मुक्त होती है। सवर याने अपने को अशुभ कर्मों से बचाना। निर्जरा याने तप-साधना-समाधि पूर्वक पूर्व सचित कर्मों से निवृत्ति। यही है जैन धर्म का तात्त्विक सार।

कृतज्ञता बोलती है :

लोकमान्य तो लोक मान्य थे। ससार के सभी विद्याध्येता-शास्त्रवेत्ता-प्रज्ञा-प्रचेता लोक मे विनीत नेता सिद्ध हुए हैं। आचार्य प्रवर की मगलमयी जैनधर्मी व्याख्या सुनकर लोकमान्य ने जो कहा, वह युग-युग का चिन्तनाधार है— "अहिंसाधर्म के लिए सारा ससार भगवान् महावीर व बुद्ध का ऋणी है। मैं मुनि श्री का आभार मानता हूँ जिन्होने भारतवर्ष के एक महान धर्म

(जैन धर्म) के विषय में मेरी गलतफहमी दूर कर उसका शुद्ध स्वरूप समझाया।

पूज्य मुनि श्री जवाहरलाल एक सर्वश्रेष्ठ व सफल साधु है। मैं भारत की भलाई के लिए ऐसे सत्पुरुषो से आशीर्वाद चाहता हूँ।"

विनय की विजय :

लोकमान्य तिलक का युग प्रेरक प्रसग प्रस्तुत करने का लाक्षणिक मूल यही है कि समाज की मान्यता किसी आचार्य के प्रति अधविश्वास तथा वलात् रूप मे आरोपित नही होती। यद्यपि साधारण ससारी लोग चमत्कार को नमस्कार करते है। पर लोकमान्य और युगाचार्य श्री के मध्य जो चर्चानुशीलन हुआ, उसमे 'विनयात् पात्रताम्' — का प्राधान्य द्रष्टव्य है। पाडित्य का प्रदर्शन, अहकार और उद्धत स्वरूप लेकर भी कई धर्मपथी विद्वान्, तपसी तथा शास्त्रज्ञ आचार्य श्री के जीवन काल मे उपस्थित हुए, पर उन पर एक विनयवान महान् पर पाडित्यप्रज्ञा प्रवण आचार्य की मार्मिक तार्किकता ने जो विजय प्राप्त की, वह विजय विनय की थी। जैतारण तथा सुजानगढ आदि स्थानो मे हुई— शास्त्रार्थ-चर्चा ने यह सिद्ध किया है कि धीर प्रशान्त विद्वान के धैर्य, औदार्य और निष्कलुष 'आत्मवत्-सर्व

भूतेषु' भाव के आगे अविनय नही टिक सकता, अविनयी पराजित होता है। क्षमा, मुक्ति, आर्जव, मार्दव, लाघव, सत्य, सयम, तप, त्याग और ब्रह्मचर्य के महाधनी आचार्यो मे श्रेष्ठ श्रीमद् जवाहराचार्य का जीवन समाज के लिए सदैव प्रेरक और उद्वोधक रहेगा, कारण इस व्यक्तित्व की सबसे बडी खूबी यह थी कि यह महात्मा पुरुष लकीर का फकीर कभी नही रहा। जैन धर्म का तात्त्विक व्याख्याता, वैज्ञानिक और विचारक श्रीमत् जवाहर लोक विनय का युगजयी प्रतीक है।

समय सबसे बड़ा परीक्षक है !

आज साधुत्व खतरे मे है, कारण साधु धर्म की शालीन परम्पराये युग-प्रचार के धक्के चढ चुकी हैं। आज आचार्यत्व लोक प्रभावोत्पादकता के क्षेत्र मे कठोर चुनौतियो के समक्ष अग्नि परीक्षा के दौर मे है। साधु और समाज के बीच अन्तराल बढता जा रहा है। आचार्य श्री तो अगमभाखी थे। उन्होने आत्मालोचना को आत्म विजय का सबलतम माध्यम माना है। उन्होने अपने दिल्ली-विहार (सन् १९३१) के दौरान एक वार बहुत ही दर्द भरे पर गहरे असरदार स्वर मे कहा—

"मेरे मस्तक पर जो भार लदा है, उसका विचार जब करता हूँ तो कपकपी छूट जाती है। मैं सोचता हूँ

'हे आत्मन्! [illegible] आदेश को भूल कर तू तुच्छ [illegible] मे क्यो उतर पडा! आज तो यह दशा है कि हम समाज को प्रेरणा करते है— 'हमारी बात सुनो।' लेकिन हम क्यो न ऐसा कर दे कि जिससे समाज हमसे कहे 'आप हमे अपनी बात सुनाइए।' इस स्थिति पर नही पहुँचने का कारण आत्म निर्बलता है।"

युग–स्वामी जवाहराचार्य ने आजीवन इस बात की चेष्टा की कि श्रावको व साधुओ-आचार्यों के बीच धर्म प्रबोध, शका निवारण, लोकधर्मी वार्तालाप तथा समाज हितकारी सवाद बद न हो। वे अपने प्रवचनो मे हमेशा लोक 'प्रेरक कथा-प्रसगो को प्रस्तुत कर धर्म-प्राण श्रावको को सत्कार्यार्थ अभिप्रेरित किया करते थे। युगाचार्य ने उपर्युक्त कथन मे जो प्रश्न खडा किया है—"समाज हमसे कहे आप हमे अपनी बात सुनाइए।" क्या हम पूज्यपाद आचार्य श्री की मर्म भावना की तह तक पहुँचे है! समय परीक्षा ले रहा है........।

सवाल–नकली भगवानों का!

युगाचार्य श्री जवाहर का जमाना हमारी राष्ट्रीय पराधीनता का था। समाज मे कुरीतियो का बोलबाला था। धर्माडम्बर का जोर था—देश भर मे। आज हमारे सामने एक सवाल है। सवाल है— उन नकली भगवानो

का मुकावला हम कैसे करें ? इस प्रश्न का उत्तर एक आचार्यपीठ ही दे सकती है। वह पीठ है आचार्य श्री जवाहर पीठ—जो वैज्ञानिक प्रयोगसत्यसिद्ध मतानुसार विचार-लहरियो के रूप मे अक्षर रूप जीवित है। ब्रह्म-रूप वह वाणी अपने जीवन काल मे इसका जवाव दे गई है—

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य, धर्मस्य यशस श्रिय.
वैराग्य स्याथ मोक्षस्य, पण्णा भग इतिङ्गना

अर्थात्- जिसमे सम्पूर्ण ऐश्वर्य हो, धर्म हो, यश, श्री, वैराग्य और मोक्ष का वास हो, उस षट्गुण सम्पन्न को भगवान् कहा गया है।

अपने को भगवान घोषित करने वाले अफण्डी जीवो की खवर लेते हुए आचार्य प्रवर कहते है— 'राम या अर्हन्त का वेष धारण करके पापाचरण करने वालो के समान और कोई नीच नही हो सकता। ऐसे धर्मढोगा लोगो के आचरण की वदौलत ही धर्म वदनाम हुआ है और लोगो को धर्म के प्रति घृणा हुई है। ज्ञानी जन धर्म ढोगियो के व्यवहारो से घवराते नही। वे धर्मलक्षणो से धर्म की परीक्षा करते है। सीता भी धर्म के नाम पर ठगी गई थी। रावण सीता को अन्य उपायो से ठगने मे समर्थ न हुआ तो उसने धर्म का आश्रय लिया। वह

रावण साधु का भेष धारण करके सीता को ठग कर गया। रावण का नाश धर्म के नाम पर ठगी के कारण ही हुआ।'

['सम्यक्त्व पराक्रम' भाग-१ पृष्ठ ६८]

आज भारत की संस्कृति, धर्म तथा अध्यात्म, वेदान्त तथा स्याद्वाद् सरीखी वैज्ञानिक धर्मविधारणाओं को पाश्चात्यविद् सराह रहे है। अपना भोग प्रधान जीवन त्याग कर जहा पश्चिम की भीड भागकर भारत में आती है हर वर्ष, वहां हम हैं कि उन लोगो को भारतीय ज्ञान, कर्म और भक्ति का सही मर्म सिखाने जैसे युग प्रभावनामूलक पुण्य कार्य को भी व्यावसायीकरण से नही बचा पा रहे हे।

वीर अत्याचार नहीं सहता

भारत धर्मनिरपेक्ष गणतंत्र है। धर्मविमुख गणराज्य नही है। हमें संविधान ने धर्म-स्वातन्त्र्य का अधिकार दिया है। यदि धर्म की हानि होती है तो हमें अत्याचारियो का सामना करना चाहिए।

आचार्य प्रवर श्री जवाहर ने बीकानेर चातुर्मास मे, सर मनुभाई मेहता के द्वितीय लंदन राउंड टेबिल कान्फ्रेंस मे जाने के अवसर पर प्रतिबोध देते कहा था—

"मैं कहता हूँ गुलाम और अत्याचार पीडित जनता

धर्म का वास्तविक विकास नही हो सकता। धार्मिक
ाकास के लिए स्वतन्त्रता अनिवार्य है।"

आज हम स्वतंत्र हैं। हमारा राष्ट्र विकासशील
। फिर क्या कारण है कि यह देश धर्मान्धाताओ के
ागुल मे फसी गुलाम और अत्याचार पीडित-शोषित-
र्म भीरु जनता की मुक्ति का सग्राम नही छेडता।

'बीकानेर के व्याख्यान ग्रंथ' के पृष्ठ ४५ मे 'मगल-
र्व' अध्याय मे आचार्य श्री फरमाते हैं—

—'आप लोग भी वीर क्षत्रिय हैं, मगर बनिया
ान रहे है। आपको बनिया नही बनाया गया, महाजन
ानाया गया था।'

कहने का सार- लड़ेगा तो वीर महाजन। समाज
ो महाजन के पथ का अनुसरण करेगा। महाजन वीर
ोता है। वीर का काम है – अत्याचार पीडितो की रक्षा
करना। यह काम बनिया नही कर सकता। अब जैन
समाज के अनुयायी – श्रमणधर्मी – सत्कर्मी-लोकमर्मी
सज्जन तय करे कि उन्हे इन नकली भगवानो के विरुद्ध
धर्मयुद्ध छेडने मे महाजन पथ अख्तियार करना है या
बनियापथ ? आचार्य प्रवर की धर्म प्रभावना का समा-
दरण तो व्यवहार से होगा।

करोड जनता गरीबी की सीमा रेखा के नीचे जी है।

गुरुत्वाकर्षण :

यश शरीर युगनिधान श्रीमद् जवाहरा
आज से दशको पूर्व, भारतीय स्वाधीनता के स्व
मे— आध्यात्मिक समाजवाद— का अनुभव कर
था। तात्कालिक धर्मो के आचार्यो मे सभवत
जवाहराचार्य ही ने खादी वेष धारण कर
साधुत्व का आदर्श उपस्थित किया था। उन्होने
जीवन–काल मे सम्पन्न हर चातुर्मास या व्याख्यान
खादी, स्वदेश भावना, धर्मपालना, रूढिमुक्ति त
वास्तविक स्वतन्त्रता तथा सामाजिक समता का
गभीर वाणी मे उपदेश फरमाया था। उनकी वाणी मे
देशात्मा की गूंज रहती थी।

समाजोद्धारक दलित दीन तारक युगाचार्य
जवाहर ने असह्य शारीरिक वेदनाजन्य स्थिति मे भी
स्वाध्याय नही छोडा। गोचरी मे किसी ने पत्थर डाल
दिए तो परिषह पालना की। किसी ने निंदा
उन्होने अपने अनुयायियो को वाक्युद्ध से दूर रहने
आज्ञा दी। चुनौतियो के आगे कभी झुके नही। बाध
को देखकर कभी रुके नही। समाज पर ऐसे ही व्यक्ति

प्रभाव पडता है। यही गुरुत्वाकर्षण है।

उनके जीवन काल मे जहा-जहा आप श्री के पुण्य चन हुए हिंसको, व्यसनग्रस्तो, कुपथगामियो, भ्रमांध-र पीडित लोगो के जीवन मे युगातर आया। उनके दय परिवर्तित हुए। एक नही, हजारो मानवो का रित्राण हुआ। अकाल बाढ-भूकम्प पीडितो, निरक्षरो, निर्धनो एव अबोले जीव जानवरो की सहायता, रक्षा तथा रक्षणार्थ तात्कालिक श्रीमन्तो, राज्याधीशो, दीवानो था समाजप्रधानो ने आचार्य श्री के प्रतिबोध से भावित होकर योग्य साधनो से अपनी सेवाये प्रस्तुत की।

प्राण जाय, साधुत्व नहीं :

श्रीमद् जवाहराचार्य तब मुनि-काल मे थे। स्थानकवासी सप्रदाय के आचार्य पूज्य श्री श्रीलालजी म सा ने किसी अपराधवश जावरा वाले सतो को सघ से निष्कासित कर दिया। उन्होने अलग सगठन करने की सोची। आवश्यकता पडी एक वाग्मी आचार्य की। प्रतिभा, पाडित्य और लोक प्रभावक व्यक्तित्व के धनी मुनिवर जवाहर के पास, गणिया (महाराष्ट्र) मे एक भाई एतद् विषयक प्रस्ताव लेकर गया।

महाराज श्री परम सिद्धान्तवादी साधु थे। उन्होने

परीषहों की सहिष्णुता से सदाचार मनोबल की अपेक्ष
बयालीस दोष टाल कर आहार पानी लेना, समिति-गुप्
आदि की परिपालना साधु जीवन की कसौटियां है
सच्चरित्र साधुओ और योगियो के आगे जमाना सि
झुकाता है।

समाजसुधार तथा जनता को ज्ञान बोध देक
सचेष्ट करने के लिए श्रीमद् जवाहराचार्य साधु समा
को समय-समय पर उद्बोधित करते रहे।

इदं न मम!

समाज का मन, मस्तिष्क और हृदय परिवर्ति
करना – करवाना चरित्रवान लोकसेवकों और ध
नायकों के ही बूते की बात है। शास्त्र कहता है— चौद
राजू लोकों के जीवों को अभयदान देना और एक व्यि
को सम्यक् ज्ञानाभिमुख करना बराबर है। 'सूत्रक
अध्याय में श्रीमद् जवाहराचार्य ने इस प्रभावना मूल
शास्त्राज्ञा का संदर्भ दिया है। वह बड़ा दूरगामी है।

महात्मा गांधी अकेले थे अपने प्रारंभिक राष्ट्रसे
जीवनकाल में। उन्हें सही ज्ञान हुआ दक्षिण अफ्रीका
मानव रंग-भेद देखकर। एक गांधी के बदलने क
जरूरत थी। उसे खादी धारने की जरूरत थी। उ

र्खा चलाना था। एक समय आया कि गांधी और ारत पर्याय हो गये।

इसी तरह साधु समाज यदि चरित्रदृढ हो, स्थित ज्ञ-ज्ञानभिज्ञ और लोक जागरण हेतु पूज्यपाद, कृतज्ञ ो तो समाज का हृदय वदल जाएगा।

श्रीमद् जवाहराचार्य कहते हैं योगियो से कि होम ो स्व को, विलयित कर दो अहं को, आत्मा मे अपूर्व ाभा का उदय होगा। वे आगे कहते है—

'योगियो! अपना किया हुआ स्वाध्याय, प्राप्त ़्या हुआ विविध भाषाओ का ज्ञान, आचरित तप ादि समस्त अनुष्ठान ईश्वर को अर्पित कर दो। अगर ़मने सभी कुछ ईश्वर को अर्पित कर दिया तो तुम्हारे सर का वोझ हल्का हो जाएगा। कामनाएँ तुम्हे नही ताएँगी। वुद्धि गभीर होगी। अपना कुछ मत रखो। कसी वस्तु को अपनी वनाई, नही कि पाप ने आकर रा।'

[बीकानेर के व्याख्यान से]

अधिकारों का यज्ञ कर दो

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन मे भाग लेने के लिए वदेश यात्रा पर जाते समय बीकानेर के दीवान, सर ानुभाई मेहता को परिलक्षित कर आचार्य श्री ने कहा-

परीषहो की सहिष्णुता मे अपार मनोवल की अपेक्षा, बयालीस दोष टाल कर आहार पानी लेना, समिति-गुप्ति आदि की परिपालना साधु जीवन की कसौटिया हैं। सच्चरित्र साधुओ और योगियो के आगे जमाना सिर झुकाता है।

समाजसुधार तथा जनता को ज्ञान बोध देकर सचेष्ट करने के लिए श्रीमद् जवाहराचार्य साधु समाज को समय-समय पर उद्बोधित करते रहे।

इदं न मम!

समाज का मन, मस्तिष्क और हृदय परिवर्तित करना – करवाना चरित्रवान लोकसेवको और धर्म-नायकों के ही बूते की बात है। शास्त्र कहता है— चौदह राजू लोको के जीवो को अभयदान देना और एक व्यक्ति को सम्यक् ज्ञानाभिमुख करना बरावर है। 'सूत्रधर्म' अध्याय में श्रीमद् जवाहराचार्य ने इस प्रभावना मूलक शास्त्राज्ञा का सदर्भ दिया है। वह बडा दूरगामी है।

महात्मा गाधी अकेले थे अपने प्रारभिक राष्ट्रसेवी जीवनकाल मे। उन्हे सही ज्ञान हुआ दक्षिण अफ्रीका मे मानव रग–भेद देखकर। एक गाधी के बदलने की जरूरत थी। उसे खादी धारने की जरूरत थी। उसे

चर्खा चलाना था। एक समय आया कि गांधी और भारत पर्याय हो गये।

इसी तरह साधु समाज यदि चरित्रदृढ़ हो, स्थित प्रज्ञ-ज्ञानभिज्ञ और लोक जागरण हेतु पूज्यपाद कृतज्ञ हो तो समाज का हृदय बदल जाएगा।

श्रीमद् जवाहराचार्य कहते हैं योगियो से कि होम दो स्व को, विलयित कर दो अह को, आत्मा मे अपूर्व आभा का उदय होगा। वे आगे कहते हैं—

'योगियो! अपना किया हुआ स्वाध्याय, प्राप्त किया हुआ विविध भाषाओ का ज्ञान, आचरित तप आदि समस्त अनुष्ठान ईश्वर को अर्पित कर दो। अगर तुमने सभी कुछ ईश्वर को अर्पित कर दिया तो तुम्हारे सिर का बोझ हल्का हो जाएगा। कामनाएँ तुम्हे नही सताएँगी। बुद्धि गभीर होगी। अपना कुछ मत रखो। किसी वस्तु को अपनी बनाई, नही कि पाप ने आकर घेरा।'

[बीकानेर के व्याख्यान से]

अधिकारों का यज्ञ कर दो

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन मे भाग लेने के लिए विदेश यात्रा पर जाते समय बीकानेर के दीवान सर मनुभाई मेहता को लक्षित कर आचार्य श्री ने कहा-

"ज्ञानी पुरुष छोटे से छोटा और बडे से बडा व्यवहार गभीर ध्येय से, निष्काम भावना से, वासनाहीन होकर यज्ञ के लिए करता है। शास्त्रकारो ने यज्ञ के लिए काम करने को पाप नही माना है। वास्तविक यज्ञ किसे कहा जाय ? गीता कहती है—

'द्रव्य यज्ञा स्तपो यज्ञा, योग यज्ञा स्तथापरे।
स्वाध्याय ज्ञान यज्ञाश्च, यतय. संशित व्रत. ॥२।४०

द्रव्य यज्ञ, तप यज्ञ, योग यज्ञ, स्वाध्याय यज्ञ आदि अनेकों यज्ञ कहे गये है। किसी को द्रव्य यज्ञ करना है तो धन पर से अपनी सत्ता उठाले और कहे इदं न मम

किसी प्रकार की आकाक्षावाला तप एक प्रकार का सौदा बन जाता है। वह तप नही रहता। तप करके उससे फल की कामना न करे और 'इदं न मम' कहकर उसका यज्ञ करदे तो तप अधिक फलदायक होता है × × × मैं सर मनुभाई मेहता को सम्मति देता हूँ कि *वे प्रधान मत्री के अधिकारो का यज्ञ करदे।*

आज राष्ट्र को फिर 'इदं न मम' तप-यज्ञ-घोषक शासनाधिकारियो व लोककर्मियो की जरूरत है। हमारे संविधान में संशोधन कर नागरिक–देश दायित्व बोध का जो अंश जोड़ा गया है वस्तुतः यह 'अधिकार यज्ञ' का ही मंगलमय अनुष्ठान है। आचार्य प्रवर जैसे ऋषिकल्प

समयज्ञ पुरुषो का स्वप्न भारत का लोक-शासक साकार करेगा, यह अपेक्षा है ।

साधु और समाज सुधार

माह अक्टूबर सन् १९३१ दिल्ली मे आयोजित 'स्थानकवासी साधु सम्मेलन' के शुभ अवसर पर युग-प्रधान श्रीमद् जवाहराचार्य के मस्तिष्क मे एक क्रान्तिकारी प्रश्न चक्कर काटने लगा— क्या साधु वर्ग को प्रत्यक्षत समाज सुधारक कार्यों मे, श्रावक जीवन मे हस्तक्षेप करना चाहिए ? प्रश्न युगान्तरकारी महत्त्व का था और आज भी है ।

विश्व-धर्मो के इतिहास पर दृष्टि डाली जाय तो जो रक्तरजित सघर्ष धर्म के नाम पर राज्य सत्ताओ ने लडे है, उनकी पुनरावृत्ति कोई नही चाहेगा । यह धर्म के नाम नर सहार, धर्म का सत्ता के साथ गठजोड होने से हुआ । यही खतरा आचार्य श्री के समक्ष सामाजिक परिप्रेक्ष्य मे उपस्थित था । सम्प्रदाय-सम्प्रदाय की आपसी तनातनी में विभक्त और अशक्त हुए जैन समाज को सघीय एकता मे आवद्ध करने के लिए उन्होने साधुओ व श्रावको के मध्य एक तृतीय स्वाध्यायी तटस्थ 'ब्रह्मचारी वर्ग' की परिकल्पना सम्मेलन मे रखी । आपने फरमाया —

"आज निर्ग्रन्थ वर्ग की स्थिति कुछ विषम सी हो रही है। साधु समाज और साध्वी समाज मे निरकुशता फैलती जाती है। इसका कारण, किस प्रकार के पुरुष और किस प्रकार की महिला को दीक्षा देनी चाहिए, इस बात का पूरी तरह विचार नही किया जाता रहा है। दीक्षा सम्बन्धी नियमो का पालन बहुत कम हो रहा है। इस नियमहीनता का दुष्परिणाम यहा तक हुआ है कि अपनी जैन सम्प्रदाय से भिन्न जैन सम्प्रदाय मे दीक्षा लेने के कारण मुकदमेबाजी तक हो जाती है। साधु समाज के निरकुश होने और साधुता के नियमो मे शिथिलता आ जाने के कारणो मे से एक कारण है—साधुओ के हाथ मे समाज सुधार का काम होना। आज सामाजिक लेख लिखने, वाद विवाद करने और इस प्रकार समाज सुधार करने का भार साधुओ पर डाल दिया गया है। समाज सुधार करने का कार्य दूसरा कोई वर्ग अपने हाथ मे नही ले रहा है। अतएव यह काम भी कई एक साधुओ को अपने हाथ मे लेना पडा है। इसलिए प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप मे साधुओ द्वारा ऐसे ऐसे काम हो जाते है जो साधुता के लिए शोभास्पद नही कहे जा सकते।

यदि समाज सुधार का काम साधु वर्ग अपने ऊपर नही लेता तो समाज बिगडता है और जो समाज

लौकिक व्यवहारो मे ही विगडा हुआ होगा उसमे धर्म
। स्थिरता किस प्रकार रह सकेगी ? व्यवहार से गया
,जरा समाज धर्म की मर्यादा को किस प्रकार कायम
रख सकेगा ?

साधु वर्ग पर जव समाज-सुधार का भार भी होगा
तव उसके चरित्र की नियम परम्परा मे वापिस पहुँचने
, से चरित्र में न्यूनता आ जाना स्वाभाविक है। इस प्रकार
का साधु समाज वडी विषम अवस्था मे पडा हुआ
एक ओर कुआ दूसरी ओर खाई सी दिखाई पडती

समाज सुधार का भार साधुओ पर आ पडने व
रणाम क्या हो सकता है, यह समझने के लिए य...
माज का उदाहरण मौजूद है। पहले का यति समाज
ाज सरीखा नही था। लेकिन उसे समाज सुधार का
ार्य हाथ मे लेना पडा। इसका परिणाम धीरे-धीरे यह
हुआ कि सामाजिकता की ओर अग्रसर होते-होते उनकी
प्रवृत्ति यहा तक वढी कि वे स्वय पालकी आदि परिग्रह
के धारक वन गए। यदि वर्तमान साधुओ को समाज
सुधार का भार सौंपा गया और उनमे सामाजिकता की
वृद्धि हुई तो उनकी भी ऐसी ही—यतियों जैसी दशा होना
संभव है। अतएव साधु समाज के ऊपर समाज का होना

न होना ही उत्तम है। साधुओ का अपना एक अ
कार्य क्षेत्र है। उससे वाहर निकल कर भिन्न क्षे
अत्यत विस्तृत और महत्त्वपूर्ण है।

अव प्रश्न यह उपस्थित होता है कि ऐसा ...
उपाय है जिससे समाज सुधार का आवश्यक और
उपयोगी काम भी हो सके और साधुओ को समाज
सुधार मे न पडना पडे।

हमारे समाज मे मुख्य दो वर्ग है— साधु वर्ग और
श्रावक वर्ग। पर उक्त वोझ पडने से क्या हानिया हो
सकती है, यह वात सामान्य रूप से, मै वतला चुका हूं।
रहा श्रावक वर्ग, सो इस वर्ग को समाज सुधार की
प्रवृत्ति करनी चाहिए। मगर हमारा श्रावक वर्ग दुनिया-
दारी के पचडो मे इतना अधिक फसा रहता है और
उसमे शिक्षा का भी इतना अभाव है कि वह समाज
सुधार की प्रवृत्ति को यथावत् सचालित नही कर
सकता। श्रावको मे धर्म सम्वन्धी ज्ञान भी इतना पर्याप्त
नही है, जिससे वे धर्म का लक्ष्य रखकर धर्म-मर्यादा को
अक्षुण्ण वनाए रख कर, तदनुकूल समाज सुधार कर
सके। कदाचित् कोई विद्वान् श्रावक मिलता भी है तो
उसमे श्रावक के योग्य आदर्शचरित्र और कर्तव्य निष्ठा
की भावना पर्याप्त रूप मे नही पाई जाती। वह गृहस्थी

के पचडो मे पडा हुआ होता है। अतएव उसकी आवश्यकतायें प्राय समान्य गृहस्थो के समान ही होती है। ऐसी स्थिति मे वह अर्थ के धरातल से ऊपर नही उठ पाता और जो व्यक्ति अर्थ के धरातल से ऊपर नही उठा है, उसमे निस्पृह, निरक्षेप भाव के साथ समाज सुधार के आदर्श कार्य को करने की पूर्ण योग्यता नही आती। उसे अपनी आवश्यकताये पूर्ण करने के लिए श्रीमानो की ओर ताकना पडता है, उनके समाज हित विरोधी कार्यो को सहन करना पडता है। इसके अतिरिक्त त्याग की मात्रा अधिक नही होने से समाज मे उसका पर्याप्त प्रभाव भी नही पडता। इस स्थिति मे किस उपाय का अवलम्वन करना चाहिए, जिससे समाज सुधार के कार्य मे रुकावट न आवे और साधुओ को भी इस कार्य से अलहदा रखा जा सके। आज यही प्रश्न हमारे सामने उपस्थित है और उसे हल करना अत्यावश्यक है।

मेरी सम्मति के अनुसार इस समस्या का हल ऐसे तीसरे वर्ग की स्थापना करने से हो सकता है—जो साधुओ और श्रावको के मध्य का हो। यह वर्ग न तो साधुओ मे परिगणित किया जाय और न गृह कार्य करने वाले साधारण श्रावको मे ही। इस वर्ग मे वे ही व्यक्ति समाविष्ट किये जाय जो ब्रह्मचर्य का अनिवार्य रूप से पालन करे और अकिंचन हो अर्थात् अपने लिए

(५) साधुओ और श्रावको द्वारा क्रमश मर्या
सासारिक वाधा वश सम्पन्न न हो सकने वाले
कर्म का नियमन करेगा।

(६) ऐसे साधु जिनसे न तो साधुत्व पूरा निभ पा
सभव हो और न ही जो साधु-ढोग ही छोड पा
इनको इस वर्ग मे स्थान मिल सकेगा ताकि
ढोग-पाप के दोष से वच सके।

विचार-वीज नष्ट नही होता

हर क्रिया का काल होता है। देश, काल, परि
स्थिति तथा युग सक्रमण की कई सस्थितिया किसी कार्य
को आनन फानन मे करवा डालती हैं, कइयो को
कालान्त प्रतीक्षा करनी होती है। धर्म और स्वतत्रता
का विचार वीज कभी-नष्ट नही होता। हर्ष का विषय
है कि जैनाचार्य पूज्यपाद श्री जवाहराचार्य की तृतीय
त्यागी श्रावक सयोजना आचार्य श्री के जन्म शताब्दी
वर्ष मे अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ द्वा
क्रियान्वित की गई है। उपासक, साधक, मुमुक्षु मदस
श्रेणियो के साथ यह 'वीर सघ' (१) निवृत्ति (२) स्वा
ध्याय (३) साधना और (४) सेवा। इन चार आधार
स्तम्भो पर सुदृढत स्थापित किया गया है। युग प्रवोत्त
श्रीमद् जवाहराचार्य म० सा० की मूल क्रान्ति भावना

ा यह आधुनिक संस्करण है।

तत् अनुशासनम् एवं उप सितव्यम् (तैतरियोपनिषद्)

समाज सरक्षणार्थ सर्वोपरि आचार्यो का अनुशासन ाज-रक्षार्थ सत्ताधीशो का शासन। लोक प्रवज्यार्थ ुद्ध आसन।

आचार्यो को महानिर्ग्रन्थी पद-मान दिया गया है। ाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काल, प्रधान, अपेक्षा तथा ावादि अष्ट महानो मे इनकी गिनती होती है।

'जीवन-धर्म' जोधपुरीय व्याख्यानो की आचार्य वर की पावन वाणी की प्रतीक पुस्तक के "श्रीजिन मोहनगारो छै"-पृष्ठ ११ मे आचार्य श्री ने फरमाया है-

"सामाजिक जीवन को सुधारने का आशय है जीवन मे नैतिकता लाना। नीति धर्म की नीव है। सच्ची धार्मिकता लाने के लिए नीतिमय जीवन वनाने की अनिवार्य आवश्यकता है। अनेक सामाजिक कुरीतिया इस प्रकार के जीवन निर्माण मे वाधक होती हैं।

साधु ऐसा चाहिए

पूज्यपाद स्व० आचार्यवर श्री १००८ श्री श्रीलालजी म० सा० कहा करते थे कि आचार्य को ना पत्थर सा कठोर, ना पानी सा नम्र वल्कि उसे वीकानेरी मिश्री

के कुंजे के समान होना चाहिए ।

आचार्यत्व का प्रकर्ष :

'ठाणाग' सूत्र के तीसरे स्थान में तीन प्रकार आचार्य बताए गये है । (१) कलाचार्य (२) शिल्पा और (३) धर्माचार्य । धर्माचार्य के तीन गुण शास्त्र है—

(१) गीतार्थी
(२) अप्रमादी
(३) सारणा-वारणा नियामक ।

भारतीय समाज की अतरात्मा का भाग्यका यदि धर्माचार्य परम्परा में कोई लोक प्रभावी सि हुआ है तो श्रीमद् जवाहराचार्य !

विरले ही होगे आचार्य प्रवर सरीखे स्पष्ट वत तथा जन-समाज की रग-रग के पारखी युग-प्रधान । मु श्री गणेशीलालजी म० को युवाचार्य पदवी-प्रधान मह त्सव मे अजमेर मे आपने कहा—

'आचार्य का काम चतुर्विध सघ मे— सारण वारणा, धारणा, चोयणा और पचोयणा करना है इन कामो के लिए यदि चतुर्विध सघ सहायता न दे त आचार्य को कठिनाई मे पड जाना पडे और आचार्य पद का गौरव भी न रहे । × × × छद्मस्थ होने के कारण

२

रूढ़ि मुक्त समाज

सदियो की दासता की विचित्रतम— मानसिक कु ठाओं, भयकरतम अध परम्पराओ, चूल्हा-चौका पथी धरम-करम की झझाओ— झूठे झमेलो और मनगढन्त पोंगापथी धारणाओ से ग्रस्त, त्रस्त एव कूट प्रभ्रमग्रस्त भारतीय समाज-भीरुओ, धर्माडम्बरियो एव आत्म-घोषित भगवानो की शोषणमूलक, मानवद्रोही नितान्त अवैज्ञानिक व्यवस्थाओ एव प्रपची प्रस्थापनाओ के विरुद्ध श्रीमद्जवाहराचार्य ने जीवन पर्यन्त अपनी वीर-वाणी का धर्म युद्ध छेड़े रखा। समाज और राष्ट्र की मूल धारा को निर्बल बनाने वाले रूढि-रक्षको के आगे वे अहिंसक योद्धा के रूप मे अनमी सिद्ध हुए।

अर्द्धशताब्दिकालिक अपने — चरैवेति-जीवन-विहारो मे उन्होने भारत के लाखो लोगो के मानस रूढ़ि-वाद से परामुक्त किए। आचार्य [illegible] भाग्यवादी हो नहीं होते, [illegible] दूर रहते है, [illegible] के [illegible]

गुजरना पड रहा है, इसकी तह मे अब हर दायित्व बो
शील नागरिक-मतदाता को जाना पडेगा। रूढ़िव
शोषण का पोषण करता है। शोषण से गरीबी बढ़
है। गरीबी से देश दरिद्री होता है। दरिद्री देश औ
व्यक्ति का न कोई धर्म होता है न कोई मर्यादा।

आचार्य प्रवर श्रीमद् जवाहर ने भारतीय जनत
के रूढि जन्य दैत्याचार (विरुद्ध आचार) से दुखी हो
कई बार कहा—यह गरीबी अमीरी को निगल जाएगी।

एक और ऐतिहासिक २० सूत्री योजना

श्रीमद् जवाहराचार्य के जोधपुरीय धर्म प्रवचनो की एक प्रभावक कृति है—'जीवन-धर्म'। इस पुस्तक मे एक अध्याय है "परमात्म प्राप्ति के सरल साधन।" आपको आश्चर्य होगा कि आज से दशको पूर्व एक धर्माचार्य के मस्तिष्क मे, भारत को रूढि मुक्त करने की एक क्रांति-मगता योजना के बीज वपित हुए। ज्ञान की सहज समाप्ति का यही लाभ समाज के समक्ष आज प्रस्तुत है।

एक ओर हम आर्थिक स्वराज्य की जीवन मरण [illegible] लड़ाई, इस देश की गरीबी के उन्मूलन [illegible] [illegible] लड़ रहे हैं — लड़ाई जारी है और जारी है। इसी प्रकार समाज [illegible] [illegible] [illegible] श्रीमद् जवाहराचार्य [illegible]

समाजोद्धारक-तारक योजना चुनौती के रूप मे युग का वराट सत्य और चैतन्य लिए संप्रस्तुत है।

रूढ़ि-मुक्ति के २० सूत्र :

(१) जुआ निषेध।
(२) मांसाहार निषेध।
(३) मद्यपान निषेध।
(४) वेश्यागमन निषेध।
(५) परस्त्री गमन निषेध।
(६) शिकार-त्याग।
(७) चोरी का त्याग।
(८) विवाहो मे अश्लील नाच-गान निषेध।
(९) मृत्यु पर दिखावटी रोना-धोना नही।
(१०) भय-मुक्ति।
(११) मृत्यु भोज निषेध।
(१२) अन्न की रक्षा।
(१३) दहेज निषेध।
(१४) वैवाहिक उम्र निर्धारण (बाल विवाह निषेध)।
(१५) नर्तकियो का नाच रग निषेध।
(१६) अष्टमी-चतुर्दशी उपवास विधान।
(१७) अस्पृश्यता-उन्मूलन।

(१८) आतशीपन का त्याग।

(१६) सयमित जीवनयापन।

(२०) चर्बी वाले वस्त्रो के पहिनने का निषेध।

यह है परमात्म प्राप्ति की सरल-साधना। चिन्तन के तले उतरे तो परमात्म तत्त्व सम्मुख आता है। शास्त्र कहता है—

उद्धेरदात्मानात्मानं, नात्मा न वसाययेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो, बन्धुरात्मैव रिपुरात्मन॥

—आत्मा से आत्मा का उद्धार करो। आत्मा को अवसादित मत करो। आत्मा ही आत्मा का मित्र और शत्रु है।

भारतीय आत्मा दुखी है। हम एक विकासशील राष्ट्र के सघर्षमान नागरिक है। हमे अपने राष्ट्र की पाई-पाई बचानी चाहिए। वहा हम सामाजिक रूढियो तथा व्यसनो मे फसकर प्रतिवर्ष मद्यपान, जुए तथा विलासिता मे— इस गरीब देश की अरबो की सम्पत्ति फूंक देते है।

मन-वचन और कर्म से एक ओर से नेक होकर हम अपने ज्ञानी-पुरखो की बातो पर गौर करे और उनकी राष्ट्रीय भावनाओं का समादरण अपने आचरण मे करें।

संदर्भित समाज सुधार विषयक २० सूत्री योजना के कई सूत्र हमारे लडखडाते राष्ट्रीय अर्थतंत्र को सुदृढ एव सुस्थिर कर सकते है। अन्न की बर्बादी —वैवाहिक अपव्यय आदि ऐसे पहलू हैं।

जागे तभी सवेरा :

भारत कृषि प्रधान देश है। गौ-वश इसकी आधार-रीढ है। समाज पशुवत्–पशुओं पर— अत्याचार करता है, उन्हे दुखी करता है। आवश्यकता, गोरक्षा हेतु नारे लगाने और प्रदर्शन करने की नही —"गऊमाता गोमती" का रूढि-वचन उच्चारने वालो तथा दान मे दतहीन बूढी गाय को देकर गऊ-दानी ! मोक्षकामी रूढ-मतियो को यह समझाने की है कि—भाई गोवश बचाना चाहते हो तो गोपालन का महत्त्व समझो।

आचार्य प्रवर का घाटकोपर (बम्बई) प्रवास-कालीन एतद् विषयक प्रवचन ध्यातव्य है—

"शास्त्र मे लिखा है कि प्राचीनकाल मे श्रावक जितने करोड मोहरो का व्यापार करता, उतने ही गोकुल का पालन करता था। जिस समय भारत मे गौओ का ऐसा मान था उस समय भारत वैभवशाली क्यो न होता ?"

वस्तुत इस बात को अब देश के योजनाकार भी मानने लगे हैं कि गोपालन राष्ट्रीय-कृषि-तत्र के लिए

की तो वात छोडिए पूरा पेट भरे, जितना अन्न तक नसीब
नहीं होता। तो, फैशन रूढि है। विलासिता दिखावा
। यह रूढ प्रदर्शन है।

आचार्य प्रवर द्वारा उद्वोधित वम्बई महानगरी
की जनता ने "घाटकोपर सार्वजनिक जीव दया मंडल"
की जो स्थापना की आज से दशकों पूर्व महाराज श्री के
करुणापरक उद्वोधनो से जगह-जगह जो पिंजरापोलें-
गोशालाएँ खुली-उन्हे वचाने का दायित्व हमारा है।

जागे तभी सवेरा। एक वात और। किसी महा-
पुरुष या संत ने अपने जीवन काल मे जो वात ज्ञानगम्य
व अनुभव गम्य रूप मे समाज के समस्त लोक हितार्थ
प्रस्तुत की उसको हम उसकी मूल भावना के परिदृश्य
मे धर्माचरणीय मर्यादा व मान-व्यवस्थान्तर्गत आधुनिक
रूप दें। इसका निषेध कभी नही हो सकता।

विवेक और विनय से समाज समझेगा। वीतराग
भावना के लोग जिन्होने समाज-गृहस्थ के प्रपचो से
किनारा कर लिया हो, उन्हे भी जब मानवीय करुणा
का दायित्व वोध होता है तव वे रूढिपथी धारणाओ से
जूझने मे नही हिचकते।

महाजन सूदखोर नहीं होता

सूदखोरी पाप है। आज देश सूदखोरी के विरुद्ध

मुहीम खडी कर रहा है। धर्म समथन के स्वर इस स्वार्थ-रुढ, मात्र लौकिक परिग्रही वृत्ति के खात्मे के लिए श्रीमद् जवाहर-वाणी मे अजस्र निसृत हो रहे है—

"वैश्य देश के पेट के समान है। पेट आहार को स्थान अवश्य देता है परन्तु उस आहार का उपयोग समस्त शरीर करता है। वह सिर्फ अपने ही लिए आहार नही करता। वैश्य देश की आर्थिक दशा का केन्द्र है। देश की आर्थिक दशा को सुधारना उसका कर्तव्य है। वैश्यो को आनन्द श्रावक का आदर्श अपने सामने रखना चाहिए और स्वार्थमय वृत्ति का त्याग कर जन-कल्याण की भावना को हृदय मे स्थान देना चाहिए।"

२५–२–२४ के नान्दर्डी (महाराष्ट्र)– प्रवासकाल मे आचार्य श्री के इस ज्ञान वोधात्मक प्रवचन से प्रेरित होकर वहां के सघ-समाजी सज्जनो ने माघ वदी ५ शके १८४५ के दिन जो प्रतिज्ञा ग्रहण की उसका ऐतिहासिक अवदान आज भी समाज के समक्ष अनुकरणीय रूप मे है—प्रतिज्ञा—प्रभावना विन्दु—

(१) अव से आगे जो हिसाव होगे या कर्ज लिया जायगा, उसमे १) रु० प्रति सैकडा या इमसे कम व्याज लेना।

(२) किसान या ऋण लेने वाला व्याज तथा मूल

की अदायगी का ठीक ठीक ध्यान रखें।

(३) चक्रवर्ती व्याज न जोडा जाय।

(४) यदि किसान और साहूकार के बीच मे झगडा हो तो उसका फैसला गाव-पच करे।

(५) पच-न्यायोपरान्त कोई पैसा अदा न करे तो साहूकार न्यायालय मे नालिश करने को स्वतन्त्र है।

(६) जैनेतर मडली इससे आगे दशहरे पर भैसा नही मारेगी। इसके अतिरिक्त अन्य दिनो मे भी हिंसा करने की हमने आज से वन्दी करदी है।

इसे कहते अहिंसक क्रान्तिमूलक, लोक हृदय परिवर्तन मूलक समग्र-क्रान्ति। समग्र क्रान्ति के नाम पर राष्ट्र को उत्तेजक भाषण देकर भडकाने से भूखो के पेट नही भरते। शोषण का खात्मा हल्ला मचाने से नही होता। नारो से न न्याय मिलता है न किसी का कलेजा हिलता है।

वडे आश्चर्य की वात है कि— आज का भारतीय समाज राजा-महाराजाओ-जागीरदारो और भू-धनपतियो के स्वामित्व व एकाधिकारवादी स्वेच्छाचारिता से तो मुक्त है। पर एक चक्रवर्ती सम्राट का शासन वह अपने

है। ज्ञानी ज्ञान से और अज्ञानी अज्ञान से– उसको पारते हैं। आचार्य श्री जवाहरलालजी म० सा०के समक्ष जैन-जगत् में छिडा अहिंसा गर्भित अल्पारंभ-महारंभ का विवाद बडा उग्र था। कृषिकर्म पाप जन्य मानने वाले लोगो के समक्ष आचार्य श्री अपनी बात कितनी मार्मिकता और तार्किकता से रख कर लोक समुदाय को अहिंसा की संकीर्णवादी व्याख्या से मुक्त करते हैं, यह अग्रांकित कथन से स्पष्ट होता है—

"लोगो ने कृषि कर्म को महापाप और खेती करने वाले को महापापी मान लिया है। पर खेती से उत्पन्न होने वाले अन्न को खाने मे भी पाप मान लिया तो कैसी विडम्बना खडी होगी? लोग असत्य भाषण, मायाचार, धोखा और जुआ खेलने मे अल्पारंभ मानते है और खेती करने मे महापाप मानने मे संकोच नही करते। यह उनकी गंभीर भूल है। ऋषभदेव ने सर्वप्रथम हल हाका था। जब कल्पवृक्षो से आजीविका का निर्वाह होना संभव न रहा और मनुष्य कोई भी कला नही जानते थे उस समय अगर उन्होने हल चलाकर आजीविका की समस्या हल न की होती तो मनुष्यो की क्या दशा होती? उन्होने पुरुषार्थ करने का उपाय बताया और स्वयं हाथ मे हल पकड कर जनता को

समझाया—देखो, यह भूमि रत्नगर्भा है। इसमे से रत्न निकालते रहो। इसका कभी अत नही आएगा।

[जवाहर विचार सार–पृष्ठ २४१]

अहिंसा की कालजयी भूझ

आज परिस्थितिया वो नही रही जो–पूज्याचार्य के समक्ष थी। पर ये सब बाते इस बात को सिद्ध करती हैं कि युग-युग मे आचारवान महान् पुरुषो के समक्ष अज्ञान का दैत्य किस तरह अड कर खडा हो जाता है। विचार-क्रान्ति की प्रक्रिया कभी धीमी-धीमी बहुत धीमी चलती है, कभी एक—अल्पकालिक अवस्था मे ही युग-युग की कुव्यवस्थाये धराशायी हो जाती है।

कार्ल मार्क्स हो या कन्फ्यूशियस, भगवान् बुद्ध, महावीर, गाधी या जवाहराचार्य। सबको अपने-अपने काल की क्रूर रुढियो से— लडना पडा है। रुढिग्राही पू जीवाद का पैंतरा—अभी भी नही बदला है। छद्म समाजवाद के नाम पर तानाशाही ताकतो के दात अभी भी पैने हैं। उसी तरह सकीर्ण अहिंसा का दौर भले आज अल्पारभ–महारभ के विवाद रूप मे जिन्दा होकर भी मदा पडा हो, पर क्राति–चेता–भगवान् महावीर और गौतम बुद्ध की अहिंसा को एक विदेशी ताकत के सामने चर्खा हाथ मे उठाकर, रामधुन लगाकर, देश मे—स्वदेशी

न जगाकर जो कार्य महात्मा गांधी ने अहिंसा के सत्या-
धित और युग परिष्कृत परिवेश मे प्रचारित-प्रसारित
किया था, उस आर्थिक स्वराज्य का लोक संघर्ष स्वाधीन
भारत मे जारी है। यह संघर्ष अनश्वर है। कारण यह
देश खून बहाने में नहीं, खून का प्यार जगाने मे अहिंसा
जन्य लोक सत्य का आसरा नहीं छोड़ सकता। युग की
हिंसा का महारंभ उसके सामने है। उसमे उसे वर
वाहर झूझना है—यह झूझ कालजयी है।

मित्रो ! जरा विचार करो

संवत् १९९० के उदयपुर चातुर्मास के पश्चात्
आचार्य प्रवर ने अपने विहार-काल मे जावद की जनता
के समक्ष मृत्यु भोज रूपी महाराक्षसी रूढि के विरुद्ध जो
प्रवचन दिया, वह युग-युग तक चिर अमर रहेगा।
प्रवचन-वाणी—

मोसर (मृत्यु भोज) का जीमना महाराक्षसी
भोजन है। वह गरीबो को अधिक गरीब बनाने वाला
और धनवानो को दयाहीन बनाने वाला है।

इस कुरीति ने अनेक गरीबो का सत्यानाश कर
डाला है। धनवान लोगो को पैसे की कमी नही। वे इस
प्रसंग पर पैसा लुटाते हैं और गरीबो पर ताने कसते हैं।
बेचारे गरीब जाति मे अपनी प्रतिष्ठा कायम रखने के

लिए घनवानो का अनुकरण करते है। जाति मे धनवानो की प्रधानता होती है और उन्होने प्रतिष्ठा की कसौटी इस प्रकार भी वना रखी है। पर याद रखना चाहिए, सच्चा जाति हितैषी वह है जो अपने व्यवहार से गरीवो की प्रतिष्ठा वढाता है, जो अपने गरीव जाति भाइयो की सहूलियत देखकर स्वय वर्ताव करता है, जो उनकी प्रतिष्ठा मे ही अपनी प्रतिष्ठा मानता है। सच्चा जाति हितैषी अपने वडप्पन की रक्षा गरीवो के वडप्पन की रक्षा करने मे ही मानता है।

मित्रो! जरा विचार करो! क्या एक दो दिन तक भोज मे जीमने से आप मोटे ताजे हो जायेगे? अगर ऐसा नही तो मोसर मे खर्च होने वाला धन किसी धर्म-कार्य मे, जाति भाइयो की भलाई मे, खर्च करना क्या उचित नही है? आपके अनेक जाति भाई वृथा भटकते फिरते है, उन्हे कही से कोई सहायता नही मिलती। अगर उनकी सहायता मे आप कुछ व्यय करे तो क्या आपका धन व्यर्थ चला जाएगा? यदि मोसर करने से नाम होता है तो क्या इससे नाम न होगा?

मित्रो! संसार की विषम स्थिति की ओर दृष्टि डालो:

जिसके घर आप मोसर जीमने जाते है, उसके घर की, उसके वाल बच्चो की और उसके घर की महिलाओ की स्थिति देखो तो मालूम होगा कि मोसर जीमकर

सा राक्षसी कृत्य किया जा रहा है ?"

[जीवनी ग्रथ—आचार्य जीवन, पृष्ठ २३२]

यह कथन नही, उद्धरण नही, मात्र वचन नहीं, ह तात्कालिक और वार्तमानिक युग व्यथा का मार्मिक रुणा लेख है। कालपट पर इसके अक्षर अमिट है। ानून है। दड है। जेट-कम्प्युटर युग है। पर ऐतोपगान्न ौसर चालू है। गति धीमी है पर सामाजिक दम्भ- ादिता जन्य नामवरी व देखा देखी चाल का जमाना ीता नहीं है। भारत की जनता की करोडो-अरबो की ादियो की कर्जदारी का यह दुखद रूढि-पाप है-मोसर।

क्या हमे देश, धर्म, समाज और जाति के साथ- ाथ आम आदमी की लोक लज्जा का कुछ भी ध्यान है। आचार्य श्री के सन् १६२७ के भीनासर (बीकानेर) चातुर्मास प्रवचनो की ग्रथिका 'दिव्य सन्देश' पर 'सच्चे सुख का मार्ग' शीर्षक लेख के १०१ वें पृष्ठ पर पुण्य श्लोक पूज्यपाद जवाहराचार्य फरमाते है—

'मृत्यु भोज आदि की बुरी-रीतियो को हटा दीजिए। × × × × इससे आपके देश की, जाति की, और धर्म की लज्जा रहेगी।'

धर्म गुरु-सत-आचार्य युग विचारक श्रीमद् जवाहर वाणी पर अब तो समाज ध्यान दे। अब तो समाजवादी

भारत के समाजवादी श्रावको का कलेजा पसी

चतुर्भुज बनो, चतुष्पाद नहीं

भारतीय समाज को जर्जरीभूत करने की दिशा मे विवाह-सस्था की स्वार्थिक रूढियो और—हीन-ग्रथियो ने घोर कदाचार फैला रखा है। भारत का आज का समाजवादी गणतन्त्रात्मक धर्म निरपेक्ष लोकतन्त्र श्रीमद् जवाहराचार्य सरीखे युग-प्रबोधको का चिर ऋणी रहेगा जिन्होने बाल विवाह, अनमेल विवाह, दहेज, ठहराव, वैवाहिक अपव्यय, अश्लील नाच-रग तथा लोक दिखावे की जो भर्त्सना आज से दशको पूर्व की, उसकी तीव्र प्रभावना, देश के युवा नेता सजय गाधी प्रभृति अनेको राष्ट्र सेवको व सन्नारियो ने—पुन दहेज-उन्मूलन परिप्रेक्ष्य मे ग्रहण कर लोक जागरण का कम्बुनाद किया है। सरकार ने—सासदिक निधियो व राज्य सरकारो ने क्षेत्रीय-कानूनो द्वारा भी भारत के नौजवानो व नवयुवतियो के वैवाहिक क्रय-विक्रय को कुचलने मे कोई कसर नही उठा रखी है। 'शारदा एक्ट' कभी का पास हुआ पड़ा है।

पर बात का सूत्र फिर— सामाजिक परिवेश मे एक ही ध्रुव केन्द्र पर आकर ठहर जाता है—कानून की

चतुष्पाद वनकर अविवेकी काम कामना जन्य सन्ता
वृद्धि से देश दरिद्री होगा । पाठक वधुओ ! इस चतुष्पाद
और चतुर्भुज की शब्द युग्मिता के द्वैताद्वैत पर गंभीरता
पूर्वक मनन करो— क्या यह भारतीय परिवार-व्यवस्था
और नियोजन का कल्याण मंत्र नही है ।

कन्या-विक्रय एक महापाप

वेटा–वेटी का विक्रय अपराध है । विवाह के नाम पर सौदा है । यह अमानवीय दास-प्रथा है । यह वाजार सट्टा है । समाज इससे कव मुक्त होगा ? इस सौदागर समाज को क्या भयंकर ठोकर खाने की प्रतीक्षा है ?

धर्म को जय वोलने वाले और धर्माचार्यों से गुण-गान गाने वाले भारतीय सुने, श्रीमद् जवाहर वाणी— "मेरा अधिकार सिर्फ कहने का है, इसलिए कहता हूँ कि कन्या के वदले रुपये लेना महापाप है और इस तरह का रुपया लेने वाले का भला होता देखा नही जाता ।"

[दिव्य जीवन ग्रथाक १६४]

अशक्ति का स्वागत ।

भारत मे आज भी प्रतिवर्ष हजारो—वाल विवाह होते है । मा वापो की गोदियो मे गोद वीद-वीदणियो के फेरे ये धनकीट पडित करवाते है । गर्भस्थ शिशुओ की सगाइया तय हो जाती हैं । वर-वधुओ की ये अनाथ

तह–शोध में जा रहा है।

पहले आदमी हथियारो से, अब कागजो से लडता है। उसने कलम–युद्ध तेज कर दिया है। मौत और जिन्दगी कागज पर मडी है।

अनगिनत व्यवसायी, कृषक, गृहस्थी, धर्म-मठपति, मन्दिरो-मस्जिदो–गुरुद्वारो-चर्चपतियो के झुड के झुड वकीलो के चक्कर काटते व कचहरियो के फेरे देते-देते कंगाल हो चुके है। पर आदमी जात है वही जीवट वाली। वह मान हानि का मुकदमा लडता है—उसे देश हानि, समाज हानि, गरीबो की प्राण हानि की चिंता नही है।

श्रीमद् जवाहराचार्य ने इस रूढ-झूठाधारित फरेबी समाज-व्यवस्था पर सचोट व्यग्य करते हुए कहा है—

"आज भाई-भाई मुकदमेबाजी मे पडकर हजारो, लाखो रुपया नष्ट कर डालते हैं। सुनते है एक—गोदी के मुकदमे मे १७ लाख रुपया पूरा हो गया। ऐसे लोग मैत्री भावना की आराधना कैसे कर सकते है ?"

[बीकानेर के व्याख्यान-मगतपर्व, ६८]

मा भै :

आदमी लडता है। आदमी डरता है। आदमी

गुरु सेवा का महत्त्व ही क्या समझा ?

"अगर तुम श्रावक होकर भी अपने घर क कचरा गली के नाके पर बिखेर देते हो और गदगी क बढाते हो तो कहना चाहिए कि—तुमने अब तक यह भी नही समझा कि गुरु की सेवा किस प्रकार करनी चाहिए ? तुम्हे स्वामी बन कर नही वरन् सेवक बनकर जन समाज की सेवा करनी चाहिए । सेवा करते-करते अगर प्राणो का उत्सर्ग करना पड जाय तो वह भी प्रसन्नतापूर्वक करना चाहिए ।"

[जवाहर विचार सार : विविध विषय : २७२]

सुधार चाहते हो या बिगाड़ ?

तुम अपना बगला साफ रखना चाहते हो पर अगर तुम्हारा शरीर साफ नही हुआ तो बगले की सफाई से क्या होगा ? तुम आलमारी, मेज आदि फर्नीचर को तो साफ रखो पर शरीर सुधार की ओर तनिक भी ध्यान न दो तो वह सुधार है या बिगाड ?

[जवाहर विचार सार . प्रकीर्णक · पृष्ठ २७७]

शास्त्र कदापि नही कहता कि तुम मैले कुचैले रहो और गदगी भरे रखो । वस्तुत गदगी और मैलेपन ही से रोग फैलते है । यह एक किस्म की हिंसा है ।

[सम्यक्त्व पराक्रम (भाग १)]

और लेखनी का ऐक्य आलोकित कर दिखाना है। हम अपना घर साफ करें। नौकरो के भरोसे न रहे। घर मे तो नौकरशाही मत आने दो। अपना काम अपने आप। जो अपनी सहायता खुद नही कर सकता, खुदा भी उसका सहायक नही होता।

गदगी, मानवता के प्रति एक खुला द्रोह है। यह सभ्यता के विनाश का सूचक है।

अहिंसक शुद्धता की व्याख्या

आचार्य श्री जवाहर कहते हैं—

"वास्तव मे अहिंसा धर्म को ठीक तरह न समझने के कारण ही घर मे गंदगी रहती है। जिनके घरो मे आटा, दाल और इसी प्रकार की कोई अन्य खाद्य वस्तु सडी गली पडी रहती है और उसमे जीव जन्तु उत्पन्न होते रहते है। उन लोगो ने अहिंसा धर्म के मर्म को समझा नही है। इस कथन मे जरा भी अत्युक्ति नही है। जो लोग अपना ही घर साफ सुथरा नही रख सकते, वे दूसरो के घर की क्या खाक सफाई करेंगे?

[जवाहर विचार सार प्रकीर्णक २७६]

गदगी के उन्मूलन मे अहिंसा आडी नही आती। गदगी कीटाणुओ की जन्मदात्री है, अत यह एक खुली

हिंसा है। एक वीर-धर्मी जैन को हिंसा का प्रतिरोध करने के लिए आचार्य श्री के युग-प्रबोध पर कमर कस कर एक सत्याग्रही की तरह लोक सेवा के क्षेत्र में कूद पड़ना चाहिए।

आइए! हम जैनाचार्य जवाहरलालजी म० सा० के जन्म शताब्दि वर्ष में राष्ट्रीय लोक स्वच्छता यज्ञ के सत्याग्रही होता बनने का सत्संकल्प धारें। युग परिवर्तन के लिए किसी बाहरी नेतृत्व की प्रतीक्षा नहीं रहती। एक आत्म स्फूर्त चेतना व्यक्ति और राष्ट्र की आत्मा को जगाती है।

एक निवेदन। भंगी भी आदमी है। आप और हम जैसा—हमसे बढ़कर। इसलिए उसे 'महत्तर' कहा गया है। पर जैसे 'महाजन' शब्द रूढ़-पतित हो गया और 'वणिया' संज्ञक रह गया वैसे ही 'महत्तर' शब्द की महत्ता भी 'भंगी' सम्बोधन के साथ अधोगामिनी हो गई। व्यक्ति की तरह शब्द भी पतित होते हैं।

सद्धर्म मंडन-महिमा

स्वस्थ तन में स्वस्थ मन का वास होता है। हम अपना तन-मन साफ रखेंगे तभी हमारा कल्याण होगा। मन के मत्ते चलेंगे तो सही मायनों में सफाई की जगह सारा सफाया हो जाएगा। कारण—मन चचल है। उस

तक विज्ञान नही पहुँच सका है। वह मायावरण
रहता है। अत आप और हम सब न्यूनांशतः छद्मस्थ
जीव है।

आचार्य प्रवर ने अपने जीवन काल में अहिंसा-धर्मी जैन समाज की तार्किक तत्त्व विवेचनार्थ प्रतिरोधी शक्तियो के सामने 'सद्धर्ममडन' विषयक ग्रथिका प्रस्तुत की थी।

वस्तुत: सद्धर्ममडन क्या है ?— सत्य धर्म का अभिमंडन–उसका स्तवन। उसका स्वीकरण। उसका अनुगमन। सत्य-धर्म मानवता का प्रतिहारी होता है। अहिंसा मानवता की अतरात्मा।

जैन धर्म मानवता की अंतरात्मा की आवाज सुने। यह युगापेक्षा है। कारण विश्व व्यापी स्तर पर चारो ओर गदगी बरस रही है। जीव हिंसा बढ रही है। जलवायु प्रदूषण के मारे आकाश मे पक्षी सवर्ग और धरती पर बसने वाले जीव चराचर का तन, मन, विचार, सस्कार और व्यवहार-आचार अशुद्ध हो गया है।

आवश्यकता है आज एक वीर जवाहर की। एक शुद्ध–बुद्ध–महावीर आत्मोद्भव की।

वीज-मूल प्रगटता है। अनेक वलिदानी रक्त धाराओ
स्नान कर क्रान्ति की कालिका महारुद्रा सी कई व
विश्व के हर क्षेत्र मे अट्टाहसी हँसी हँसी है।

यह भारत का ही सौभाग्य कहिए कि यह
आजादी का सघर्ष कतिपय आपवादिक घटनाओ क
छोड सर्वथा अहिंसक पर शौर्यपूर्ण रूप मे सतत चलत
रहा। इस देश की मिट्टी की प्रकृति नर-सहार की नहीं
वल्कि नर-सवार की है। "वडे भाग मानुप तन पावा"
की आर्ष मान्यता के धनी इस देश की समाज-क्रान्ति का
वीज-मूल युद्ध मे नही वल्कि शाति मे सरक्षित रहता
है।

सादा जीवन उच्च विचार

भारत की अपरिग्रही सस्कृति के सवाहक आचार्य
श्रीमद् जवाहर, धर्म सघाधिपति होकर भी खादी पहिनते
थे। आचार-क्रान्ति तो यो ही होती है। महात्मा गाधी
की खादी और स्वदेशी भावना के लोक प्रचार मे— युग
प्रवोधक श्रीमद् जवाहराचार्य ने अधिकाश प्रवचनो मे
विलायती कपडो के त्याग की उत्प्रेरणा समाज को दी
है।

'जीवन धर्म' ग्र थ के अध्याय 'कहा से कहा' पृष्ठ
२८२ पर खादी के वारे मे आचार्य श्री की वाणी महात्मा

भारतीय राष्ट्र की स्वतंत्रता के पश्चात् हमने स्वतत्रता का अर्थ बोध ही खो दिया था। हडताल, घेराव, तालावन्दी तथा चुनी चुनायी जन-सरकारो की गिरावट तक की स्वतंत्रता, हमने और आपने लोगो को भोगते देखी है। यह दौर कहा तक चलता ? देश की आजादी ऐसे मे ही तो खतरे मे पडती है। फलत अनुशासन-पर्व का दिशा बोध—जनता अ गीकारती है।

जनता चाहती क्या है ? जनता परिवर्तन चाहती है। वह स्वतत्रता चाहती है जीवन जीने की, खाने-पीने की, रहन सहन और भाव भजन की, वाणी–लेखन की–भारत के सविधान ने ये सुविधाएँ उसे दे रखी है। पर स्वतंत्रता की असलियत क्या है ? श्रीमद् जवाहराचार्य की पुण्य वाणी मे सुनिए—

"स्वतत्रता तो सभी चाहते है लेकिन जो लोग आकाश मे स्वैर विहार करने की भाति केवल लम्बे-लम्बे भाषण करना ही जानते है वे—परतत्रता का जाल कभी नही काट सकते। यह जाल तो जमीन खोदने वाले किसान ही काट सकते है।"

['सवत्सरी' गथाक २७३]

बस यही से गरीब शोषित की बात चालू होती है।

द्र दसना

श्रीमद् जवाहर नर्मानार्य होकर भी एक मनोगुणी माजवादी थे। उनकी आत्मा बहुत दुखी थी गरीबों को देखकर। वे सदैव अपने श्रावको को मालो, मोरदों, दिजनो, किसानो तथा श्रमजीवियो के उत्थान के लिए ारत होने का प्रतिबोध देते थे। उन्होंने जैन व जैनेतर माज के धनाधीशो को अपने प्रवचनो मे जो कटुसत्य द्घोषित किए हैं, उनकी अप्रतिमता अथाकिन उद्धरणा से सिद्ध होती है—

"आप लोगो के पास जो द्रव्य है, उसे अगर परोपकार मे, सार्वजनिक हित मे, दीन-दुखियो को साता पहुँचाने मे नही लगाया गया तो याद रखना इसका व्याज चुकाना भी तुम्हे कठिन हो जाएगा।"

[दिव्यजीवन—४६]

वित्तेणताणं न लभे पमत्ते :

समाज का धन तस्करी, चोरबाजारी और हरामखोरी से एकत्र करने वाले— दो नम्बर के पैसे से सेठो का बचाव धन दौलत से नही हो सकता। यह शास्त्र वचन है।

दिल से हराम को निकालो

लोग अपनी-अपनी जातियो मे सुधार के लिए

कानून बनाते है, जातीय सभाओ मे प्रस्ताव पास क
है, लेकिन जब तक हृदय मे हराम आराम से बैठा है त
तक उनसे क्या होना जाना है ?

[जीवन धर्म कहा से कहा २८६]

सच्चा व्यवहारी कौन ?

यह विश्व विदित है कि भारतीय किसान ससार का सबसे अधिक मेहनती व्यक्ति है। जितनी प्राकृतिक आपदाये और निराशाये भारतीय किसान को उठानी पडती है, उतनी ससार मे किसी किसान जनता को नही।

भारत का किसान दयालुता, मानवता और अतिथि सेवा-परम्परा तथा लोक सास्कृतिकता का परम रक्षक और लोक धर्म का सात्विक सरक्षक सिद्ध हुआ है। वह निरक्षर होकर भी भारत की लोक नेत्री प्रधान-मंत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के शब्दो मे अशिष्ट नही है, शालीन है, सुसस्कृत है। उसे कर्जदार बनाया इस समाज ने। उसे गरीब बनाए रखा यहाँ के शोषक सत्ता पतियो व एकान्त सुखोपभोगी धनाधीशो ने। इन्हे उठने नही दिया तो धर्म के नाम पर दूकाने चलाने वालो ने।

भारतीय किसान सद्व्यवहारी है, सदाचारी है।

ीमद् जवाहराचार्य स्वय एक ऐसे गांव (थादला-
ालवा मे) मे जन्मे थे जहा की लोक दरिद्रता को
किशोर गृहस्थी— श्री जवाहर लाल ने अपनी आखों से
खा था।

आचार्य प्रवर कहते हैं— "गरीब किसान उतना
सत्यमय व्यवहार नही करता जितना साहूकार कहलाने
ाले सेठ करते हैं। किसी किसान ने स्वार्थ से प्रेरित
होकर किसी को डुबोया हो ऐसा आज तक नही सुना
ाया। किन्तु बडे व्यापार करने वाले सैंकडो लोगो ने
लोभवश दीवाला निकाल दिया और कइयो के पैसे हजम
कर बैठे।

[दिव्य सन्देश - अल्पारभ-महारभ · २१०]

स्वतंत्रता बनाम दौलत :

इस देश मे पराधीनता का जो लम्बा काल चला
उससे सबसे बड़ी हानि समाज की यह हुई कि धन, ज्ञान
तथा सत्ता का जबरदस्त केन्द्रीकरण मुट्ठी भर धनपतियो,
पुरोहितो और निरकुश शासको के हाथो मे हो गया।

आम जनता इस तिहरे केन्द्रीकरण के जाल मे,
अभावभोगी, आतककारी तथा कदाचारी परिस्थितियो
से विवश होकर दिनोदिन रसातल को चली जाती
रही।

४

अनुशासन-पर्व

णमो धम्म सघस्स

व्यष्टि-कल्याण से अधिक पुण्यकारी समष्टि-धर्म है।

जनाचार्यो ने सघ को पूज्य माना है। सघ याने लोक शक्ति। लोक शक्ति को धर्म-माता का बहुमान प्रदान किया जाय तो धार्मिक लोकतंत्र की शोभा बढती है और आचार्यानुशासन समादृत होता है।

कलियुग या कहिए कल-युग मे शक्ति का वास सघ मे ही रहेगा, यह आज, कल और परसो का सत्य है यह नानृत नही। सन्मार्ग प्रवर्त्तक आचार्य विवेकवान होते हैं। वे न तो अधविश्वास मे पडते हैं और न ही वे चाहते हैं कि श्रमण-सस्कृति कूप मडूक हो।

आचार्य की सिह-दृष्टि सब देखती है। अत उसे लोक-द्रष्टा कहा गया है। लोक-द्रष्टा की भूमिका मात्र

दर्शक की नही वरन् दृश्यमान जगत् के सयमन एव अनुशीलन हेतु स्रष्टापदीप की होती है।

लोकजीवो को निरन्तर ज्ञानाभिमुख प्रतिश्रुत रखना आचार्यानुशासन का गहन दायित्व है। वह सघ-विग्रह के वक्त एकान्तिक योग साधना का नाम लेकर—अपने को तटस्थ नही रख सकता। भद्रबाहु स्वामी ने इस तत्त्व को जिस गहराई से ग्रहण किया था, वह क्षमा-वीर की सर्वोच्च भूमिका थी।

जवाहर-योग

श्रीमद् जवाहाराचार्य लोकयोगी थे। उनके समय मे श्रमण-परम्परा मे कम विग्रह नही था। उन्होने एक—साहसिक धर्मनायक के नाते सघ-श्रमणो को अपनी ज्ञानगम्य और अनुभव सिद्ध वाणी से जो प्रतिबोध प्रदान किए है, उन सबका समाजशास्त्रीय दृष्टि से साहित्य-समालोचनात्मक अनुशीलन करने से एक ही तत्त्व पकड मे आता है, वह है—जवाहर योग।

हर युग-प्रधान की अपनी शैली होती है। पूज्य-पाद श्री जवाहराचार्य की शैली थी बीकानेरी मिश्री के कु जे सी। मिश्री कडक भी . मिश्री मधुर भी। माँ प्यार भी करती है और बच्चे को ताडती भी है।

ंघ प्रतिबोध के युगस्वर

श्रमण-सस्कृति के अनुपम-अनुशास्ता श्रीमद्
चार्य ने अपने जीवनकाल मे दो ही बातो पर
यादा जोर दिया। श्रमणो मे सौजन्य और सौख्य
वर्द्धन और हर हालत मे सघ-एकता का दृढीकरण—
न दोनो मे इस आलेख मे हमारा प्रतिपाद्य विषय
ाचार्य श्री का सघ को दिया गया युग-प्रतिबोध है।

बार बार को कहना है अन्यथा कोई [illegible] [illegible] है । आचार्यों के आप्तवचन [illegible] हमारे सम्मुख हैं ।

समाज में कीर्ति लुब्ध लोग सदा होते आए हैं । उनको आचार्य प्रवर जानते हैं—

अभी मोह ग्रंथि नहीं खुली !

"अगर आप समाज में प्रतिष्ठा पाने के उद्देश्य से सामायिक करते हैं, कीर्ति के लिए उपवास करते हैं और सम्मान पाने के लिए भक्ति करते हैं तो समझ लीजिए कि अभी मोह की ग्रन्थि नहीं खुली है ।"

[बीकानेर के व्याख्यान : [illegible]]

मोह की गांठ, सामायिकों में [illegible] [illegible] का तो कहना ही क्या ! आज तो पूरा युग, पूरी पीढ़ी, पूरा जोर, प्रचार कामी हो गया है ।

लोग रुई का दान भी करते हैं और स्वर्ग विमान की ओर आँखें गड़ाते हैं । दान देकर मानयश-कामी लोगों को आचार्य प्रवर कहते हैं—

"दान के साथ अगर अभिमान आ गया तो—

[illegible]

[illegible] जैन [illegible] फिर भी आप आपस मे लड रहे है। भाई-भाई को [illegible] उचित है? क्या आपको नही मालूम कि ऐसे कामो से धर्म की निंदा होती है और धर्म-प्रभावना के कार्य मे रुकावट होती है।"

[जीवनधर्म २६०]

किसी पर सख्ती नहीं

"मैं किसी पर सख्ती नही करता। मेरा कर्त्तव्य आपके कल्याण की बात बता देना है। आपको जिसमे सुख लगे, वही आप कर सकते है। मगर मै आपको यह चेतावनी देना चाहता हूँ कि अब पहले जैसा जमाना नही रहा। एक भयकर आँधी उठ रही है। वह आँधी आकर सभी ढोगो को अपने साथ उडा ले जाएगी।"

[जीवन धर्म ३६२]

धर्म और भ्रम

"जैसे खान मे सोने के साथ—मिट्टी मिली रहती है, वैसे ही धर्म के साथ लोक भ्रम मिला रहता है।"

[धर्म और धर्मनायक : १५५]

सघ-स्वरूप

"सघ शरीर के समान है। साधु उसके मस्तक है, साध्विया भुजायें, श्रावक उदर के स्थान पर है और श्राविकायें जघा है। मस्तक मे ज्ञान हो, भुजा मे बल हो, पेट मे पाचन शक्ति हो, जघा मे गतिशीलता हो तो अभ्युदय मे क्या कसर रह जाएगी।

['सवत्सरी' : १४८]

प्राणोत्सर्ग : संघ हेतु

"सघ-शरीर के सगठन के लिए सर्वस्व का त्याग करना भी कोई बडी बात नही है। सघ के सगठन के लिए अपने प्राणोत्सर्ग में पीछे पैर नही रखना चाहिए। सघ इतना महान् है कि उसके सगठन हेतु आवश्यकता पड़ने पर पद और मोह न रखते हुए इन सबका—त्याग कर देना श्रेयस्कर है।"

[संवत्सरी : १४७]

नेतृत्व नही है। वाक् शूर गली-गली मे मिल जायेंगे पर कर्मवीर गाँधी उनमे नही है। लोक स्वच्छता सेवक सेनापति वापर दम्पतियो का अभाव है, अकाल है। फिर देश बढेगा कैसे ? हम घर की सफाई के लिए झाड़ू छूना ही नही चाहते। गली की गंदी नाली मे अटके कचरे को लकडी से नाली के किनारे करने के काम को 'भगी कर्म' समझते है। 'भगी' को हमने अभी भी मन से स्पर्श्य नही मान रखा है।

हम द्वैताचारी हैं। हम मुखौटाधारी हैं। हम वो है ही नही जिनके बूते पर कोई राष्ट्रधर्मिता पल्लवित, पुष्पित और प्रस्फुटित हो सके।

प्रकाश बोलता है

राष्ट्रधर्म, लोक नैतिक राष्ट्रीयता के लिए आवश्यक है। मेरे दिवगत अग्रज बधु कवि श्री रामनाथ व्यास 'परिकर' ने अपनी विश्व यात्रा के सस्मरणो का सार एक कथन मे मुझे प्रगटाया "दुनिया के कुछेक सम्पन्न राष्ट्रो को छोड कही पर भी वहाँ के नागरिक अपने देश का मान धन से नही तोलते-मोलते। उन्हे अपनी कला, साहित्य और सस्कृति पर गर्व होता है। वे अपने शहीदो, योद्धाओ और कवियो तथा नाटककारो

की चर्चा करते हैं पर गंदी राजनीति और भ्रष्टाचार लोक चर्चा के विषय नहीं होते आम-आदमी के पारस्परिक संवाद में। मांसाहार न लोग ज्यादा खाते हैं, न अखबार-पुस्तक पढ़ते हैं। हम जैसा देश जहाँ शास्त्रवादी संस्कृति की नींव गहराई हुई है, धर्म की लीला जहाँ नहीं चलती—वहाँ के नगरों तथा कस्बों तक में कलाकारों, शहीदों तथा राष्ट्र स्तरीय लेखकों के स्मारक तथा बुत दृष्टिगत होंगे। राजनेताओं की अपेक्षा सांस्कृतिक प्रतिमाओं का गहरा आदर है। जापान में एक भारतीय दुर्भाग्यवशात् खाने का जुगाड़ नहीं बिठा पाया। उसे बुभुक्षित देख एक मिठाई विक्रेता ने उसको भोजन करवाया। उससे पैसे की मांग नहीं की। पर उसको विदा करते वक्त यह जरूर कहा कि "भाई तुम भारत लौटो तो किसी से यह मत कहना कि मैं जापान में एक दिन भूखा रहा।"

क्या हम अपने को अनुशासित कर एक राष्ट्र को अपने में जीना नहीं सीखेंगे? यदि ऐसा नहीं हुआ तो न कोई धर्म हमारा बचाव कर सकता है न कोई पथ। प्रकाश बोलता है। ज्ञान कहीं कैद नहीं होता। भारत का प्रकाश मुखर हो। हमारे देश का व्यक्तित्व बने। हम निराश न हों। बस, हम अपने हाथ-पांव संभाल लें।

राष्ट्र धर्म का विचार-सूत्र

श्रीमद् जवाहराचार्य ने 'राष्ट्र धर्म' की हमे परिकल्पना दी है। आचार्य श्री फरमाते है—

"जिस कार्य से राष्ट्र सुव्यवस्थित होता है, राष्ट्र की उन्नति, प्रगति होती है, मानव समाज अपने धर्म का ठीक-ठीक पालन करना सीखता है, राष्ट्र की सपत्ति का सरक्षण होता है, सुख-शाति का प्रसार होता है, प्रजा सुखी बनती है, राष्ट्र की प्रतिष्ठा बढती है और अत्याचारी राष्ट्र, स्वराष्ट्र के किसी भाग पर अत्याचार नही कर सकता—वह कार्य राष्ट्र-धर्म कहलाता है।

[जवाहर विचार सार धर्म विचार ८२]

आज देश को बाह्याभ्यान्तरिक खतरो के बीच सावधान रहना है। दशकों-पूर्व एक साधुमना राष्ट्रसत अपने देश के धर्म पर अपनी बात समाज के समक्ष रखता है— उसका दूरदर्शन कमाल का ही कहा जाएगा कि वह स्वराष्ट्र पर अत्याचारी राष्ट्र के अतिक्रमण की सभावना मात्र से आक्रोशित हो उठता है।

एक आचार्य एक राष्ट्रसत, एक युगप्रधान की अतरात्मा कल चिंतित हुई इस देश के लिए। उसकी चिंता मिटी कहाँ ? उसका दर्द हल्काया कहाँ ? उसका चिन्तन जीवित है—जीवन्त है।

इस राष्ट्र की आत्मा अमर है। हम भले अंग्रेजों से जूझते आए हैं पर गांधी और विवेकानन्द, कबीर, टैगोर, वल्लतोल, प्रसाद और निराला जैसे विश्वकवि हमारी ही धरती जन्माती है। सूर-तुलसी और मीरां—अरटान और लल्लेश्वरी के गीत हम नहीं भूले हैं। हमें साम्राज्यवादी ताकतों ने अतीत में लूटा है। अब यह लूट नहीं चलेगी। हम एक राष्ट्र बन रहे हैं।

ज्ञान मिलेगा—श्रद्धावान को

गीता कहती है—श्रद्धावान को ही ज्ञान मिलता है। एक पुराकवि ने भी अपनी काव्य पंक्तियों में श्रद्धा को श्री-पद दिया है—धर्म बोध का तत्त्व यह प्रस्तुत है—

सद्ध नगर किच्चा, तव संवर म माल।
खंति निउणपागार, तिगुत्त दुप्प धंसय।।
धणु परक्कम किच्चा, जीव च इरियं सया।
धिइ च केयण किच्चा, सच्चेण पलि मंथए।।
तव नाराय जुत्तेण, भित्तेण कम्म कुंचय।
मणी विगय सगामो, भवाओ परि मुच्चई।।

[श्रद्धा (सत्य पर अटल विश्वास) रूपी नगर, तप एवं संवर (संयम) रूपी अर्गला, क्षमारूपी बढ़िया-गढ़—तीन गुप्ति (मन-वचन-काया नियमन) रूपी –

शतघ्नी तोप, पुरुषार्थरूपी धनुष, ईर्या (विवेकरूपी प्रमाण) रूपी डोरी, ज्या और धैर्य रूपी ध्वजा बनाकर सत्य के द्वारा कर्म शत्रुओ का नाश करना चाहिए।

[जवाहर विचार सार : पृष्ठ २६०]

आचार्य प्रवर श्रावकों का मनोवल वढाने मे सिद्धहस्त थे। विवेकानन्द और रामतीर्थ की सी फडकती उद्बोधन शैली का सा नैसर्गिक आनन्द पाठको के समक्ष एक कथन-वचन के माध्यम से प्रस्तुत है—

"ए मानव! कायरता छोड दे। अपने पर भरोसा रख। तू सब कुछ है। दूसरा कुछ नही है। तेरी क्षमता अगाध है। तेरी शक्ति असीम है। तू समर्थ है। तू विधाता है। तू ब्रह्मा है। तू शकर है। तू महावीर है। तू बुद्ध है।

[दिव्य सन्देश सत्याग्रह १६७]

"पगड़ी नहीं छोड़ते लोग ... ..."

समाज सुधरते-सुधरते सुधरेगा। सुधार की प्रक्रिया धीमी होती है। खून खराबा करके—रक्त पूर्ण क्रान्ति लाने वाले राष्ट्रो को बनने मे काफी समय लगा है। भौगोलिक सीमाओ मे हमारा राष्ट्र बहुत विराट है। छोटे-छोटे देश सम्पन्न हुए है तो एक ही कारण से—उन्हे प्राकृतिक सम्पदा ने निहाल कर दिया। जितने हाथ

खाने में लगे उनसे दूने यदि राष्ट्रीय उत्पादन मे जुटें तो हमारा देश भी शीघ्र तरक्की कर सकता है। हमे गर्व है कि देश की हवा बदल रही है।

पर जहाँ आधे से अधिक राष्ट्र की जनसंख्या आज भी निरक्षर और क्षुधाग्रस्त है। उसमें पगडी-धोती की झूठी आन-मान की टटेबाजी भी अभी चल रही है। जबभी श्रीमद् जवाहराचार्य कोई करारी—न्यारी बात समाज को प्रस्तुत करते थे, उसका प्रतिपाद्य विषय गहन होता था। 'पाच व्रतो' पर चर्चा करते हुए आप फरमाते हैं—

"लोगो ने अहिंसा का अर्थ जीव न मारना, इतना ही समझ लिया है। लोग दया भी सूक्ष्म जीवो की ही करके अहिंसावादी बनना चाहते हैं, क्योकि उसमे कुछ करना धरना नही पड़ता। भाई-भाई आपस मे कट मरेंगे पर स्थावर जीवो की दया मे वे आगे रहेगे। भाई को मारने, उसका नाश करने, उसे हानि पहुँचाने और उसका हक छीनने को तैयार रहते हैं, फिर भी कहते हैं, "मैं महीने मे ६ दया पालता हू।" क्या यही दया का स्वरूप है? आज हाल तो यह हो रहा है कि पगड़ी तो छोडते नही और धोती छोड़ने को लोग तैयार हो जाते है।"

[जवाहर विचार सार ६२]

एक टीसता सवाल !

पूज्यपाद श्रीमद् जवाहराचार्य की आत्मा को अछूतो और विधवाओ की सामाजिक दुर्दशा से आजीवन पीडा बनी रही। आज अछूतोद्धार के लिए पूरा राष्ट्र नए आर्थिक कार्यक्रम की कर्मवेदी पर सन्नद्ध खडा है। अछूतो, दलितो, पतितो का तारण तो इस देश मे हो जाएगा। पर एक टीसता-सा सवाल समूचे भारतीय समाज के समक्ष प्रस्तुत है—हमारी विधवा माताओ, वहिन, बेटी-बहुओ तथा अनाथ ललनाओ के प्रति सामाजिक अत्याचार का खात्मा कब होगा ?

जब तक इस देश की नारी रोती रहेगी, उसकी आत्मा कलपती रहेगी तब तक हम सिर ऊँचा उठाकर नही चल सकेगे। जवाहर शताब्दि वर्ष पर यह आग्नेय प्रश्न हम श्रीमद् जवाहर वाणी मे ही प्रस्तुत करना अपना सृजन-धर्म समझते हैं—

"विधवा वहिनो की दशा पर जब मै विचार करता हूँ तब मेरी आँखो मे आसू आ जाते हैं........याद रखना इन विधवाओ के हृदय से निकली हुई आहे वृथा नहीं जायेगी। समय आने पर वे ऐसा भयकर रूप धारण करेगी कि भारत को भस्मीभूत कर डालेगी। आप पशुओ पर दया करते है, छोटे-छोटे जतुओ पर

करुणा की चर्चा करते है, पर इन विधवा बहिनो की तरफ ध्यान नही देते । क्या इनका जीवन सूक्ष्म कीट-पतगो और पशु-पक्षियो से भी गया बीता है ?"

[दिव्य सदेश रक्षा बधन ४४]

सवाल अगारवत् है । पूज्यपाद की चेतावनी रोगटे खडे कर देने वाली है । विधवाये अत्याचार से मुक्त हो । उन्हे समाज पावो पर खडा करे—यह युगापेक्षा है ।

दिव्य शांति का उदय

जीवन भर जिस महाप्राण सत ने समाज को ज्ञानालोकित किया, समाज को अपना सर्वस्व देकर जो पडितमरणधर्मी हुए । उनकी वाणी भारतात्मा मे सदा गू जती रहेगी । उन्होने अपने महाप्रयाण से पूर्व जो दिव्यवाणी घोषित की, उसका एक-एक अक्षर समाज-सचेतना का प्रतीक है—

"जो तुम्हारा है, वह तुमसे कभी विलग नही हो सकता । जो वस्तु तुमसे विलग हो जाती या हो सकती है, वह तुम्हारी नही है । पर पदार्थों मे आत्मीयता का भाव स्थापित करना महान् भ्रम है । इस भ्रमपूर्ण आत्मीयता के कारण जगत् अनेक कष्टो से पीडित है । अगर 'मैं' और 'मेरी' की मिथ्या धारणा मिट जाय तो जीवन मे एक प्रकार की अलौकिक लघुता, निरूपम निस्पृहता और

[illegible] आदि का नाश हो जाए।'

[पूज्य श्री जवाहरलाल की जीवनी : ३११]

आत्म दीपो भव

दिव्य शान्ति का उदय हो रहा है। समाज सचेतित है। राष्ट्र विकास हेतु उत्प्रेरित है। पूज्यपाद के शुभ संकल्प, उनकी सामाजिक दिव्यदृष्टि, उनका युग मनोरथ, यह राष्ट्र साभार साकार करेगा। हाँ, हमे प्रकाश की खोज मे बाहर कही नही भटकना है। पूज्य-प्रकाश हृदय मे है। आत्मा के ज्योतिर्मंडल से हमे आलोकित होकर समाज के पिछडे वर्गों को ऊपर उठाना है। दरिद्रनारायण नही, हमाराआराध्य है- विकासवान महान् लोकशील-व्रती समाज—नारायण।

'सुखा सघस्स साभग्गी समग्गान तपो सुखो।'

—सुत्तनिपात

••••••• ••••••••

परिशिष्ट—१

वीर संघ योजना

धर्मप्रधान भारत के आध्यात्मिक आकाश के प्रकाश-स्तभ, युगद्रष्टा, युगस्रष्टा, युग प्रवर्तक, ज्योतिर्धर जैनाचार्य स्व श्री जवाहरलालजी म. सा. ने अपनी उद्बोधक प्रवचन शृखलाओ मे सद्गुणो के प्रचार-प्रसार एव सयम साधना के निखार हेतु एक महान् योजना प्रस्तुत की थी। भगवान् महावीर के साधना-मार्ग को प्रशस्त बनाने वाली इस जीवनोन्नायक मध्यम-मार्गीय साधनायुक्त प्रचार-योजना का वीर-निर्वाण के ऐतिहासिक वर्ष मे 'वीर संघ योजना' के नाम से क्रियान्वयन प्रारम्भ कर दिया गया है।

'वीर सघ योजना' इन चार आधारभूत स्तभो पर आधारित है—१ निवृत्ति, २. स्वाध्याय, ३ साधना और ४. सेवा।

साधना के स्तर पर वीर सघ के सदस्यो की तीन श्रेणिया हैं—

१—उपासक सदस्य

उपासक सदस्य अपने परिवार एव व्यवसाय से

आंशिक निवृत्ति लेकर प्रतिदिन सामायिकपूर्वक स्वा-
ध्याय एव व्रत प्रत्याख्यानपूर्वक साधना करते हुए
निष्काम भाव से सेवारत होने का निरन्तर अभ्यास
करेंगे।

२–साधक सदस्य

साधक सदस्य उपासक सदस्यो से साधना के क्षेत्र मे विशिष्ट होंगे। वे पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे और पारिवारिक तथा व्यावहारिक उत्तरदायित्वो से पूर्ण निवृत्त न हो पाने के कारण आंशिक निवृत्ति के साथ ही स्वाध्याय तथा सेवा के क्षेत्र मे भी उपासक सदस्यो से अधिक समय देंगे।

३–मुमुक्षु सदस्य

मुमुक्षु सदस्य परम पूज्य श्री जवाहराचार्य जी म. सा. के मूल स्वप्न को साकार बनाने वाले गृहस्थ एव साधुवर्ग के बीच की कडी होंगे। वे एक प्रकार से तीसरे आश्रम—वानप्रस्थ के तुल्य साधना युक्त जीवन के साथ धर्म-प्रचार की प्रवृत्तियो का सचालन करेंगे। उनकी गृहस्थ-जीवन से लगभग पूर्ण निवृत्ति होगी। वे परिवार एव गृहस्थ के साथ रहते हुए भी पारिवारिक उत्तर-

दायित्वो से विरत-अनासक्त व्रती श्रावक के रूप मे साधना व सेवाकार्यों में सर्वभावेन रत रहेगे। भावना के स्तर पर वे गृहस्थ से दूर एव साधुत्व के समीप रहेगे। उनका जीवन स्वाध्याय, साधना और सेवा से ओत-प्रोत होगा। समाजसेवा एव धर्म प्रभावना के लिए वे आवश्यकतानुसार देश-विदेश का प्रवास भी करेंगे। वे श्रावक वर्ग की उच्चस्थ स्थिति के आदर्श-स्वरूप होगे।

परिशिष्ट—२

श्रीमद् जवाहराचार्य विरचित साहित्य

(श्री जवाहर साहित्य समिति, भीनासर द्वारा प्रकाशित)

जवाहर किरणावली :

प्रथम किरण — दिव्य दान	३ ७५ पं०
द्वितीय ,, — दिव्य जीवन	४ ०० ,,
तृतीय ,, — दिव्य सन्देश	२ ०० ,,
चतुर्थ ,, — जीवन धर्म	४ ७५ ,,
पांचवी ,, — सुबाहुकुमार	२ ५० ,,
सातवी ,, — जवाहर स्मारक, प्रथम पुष्प	३ ०० ,,
आठवी ,, — सम्यक्त्व पराक्रम, प्रथम भाग	२ ५० ,,
नवी ,, — ,, ,, द्वितीय भाग	२ ५० ,,
दसवी ,, — ,, ,, तृतीय भाग	२ ५० ,,
ग्यारहवी ,, — ,, ,, चतुर्थ भाग बारहवी ,, — ,, ,, पचम भाग	३ ७५ ,,
सतरहवी ,, — पाण्डव-चरित्र, प्रथम भाग	१ ७५ ,,
अठारहवी ,, — ,, ,, द्वितीय भाग	१ ७५ ,,
उन्नीसवी ,, — बीकानेर के व्याख्यान	२ ७५ ,,
इक्कीसवी ,, — मोरवी के व्याख्यान	२ ०० ,,
बाईसवी ,, — सम्वत्सरी	२ ०० ,,
तेईसवी ,, — जामनगर के व्याख्यान	२ ०० ,,

चौबीसवीं किरण — प्रार्थना प्रबोध ३.७५ पै०

पच्चीसवीं ,, — उदाहरणमाला, प्रथम भाग २.०० ,,

छब्बीसवीं ,, — उदाहरणमाला, द्वितीय भाग ३.२५ ,,

सत्ताईसवीं ,, — ,, ,, तृतीय भाग २.२५ ,,

अट्ठाईसवीं ,, — नारी जीवन २.२५ ,,

उनतीसवीं ,, — अनाथ भगवान्, प्रथम भाग २.०० ,,

तीसवीं ,, — ,, ,, द्वितीय भाग १.५० ,,

सद्धर्म-मंडन ११.०० ,,

(श्री सम्यग्ज्ञान मंदिर, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित)

इकतीसवीं किरण — गृहस्थ धर्म, प्रथम भाग १.६२ पै०

बत्तीसवीं किरण — ,, ,, द्वितीय भाग १.७५ ,,

तेतीसवीं किरण — ,, ,, तृतीय भाग १.५० ,,

(श्री जैन जवाहर मित्र मंडल, ब्यावर द्वारा प्रकाशित)

तेरहवीं किरण — धर्म और धर्म नायक २.१० पै०

चौदहवीं ,, — राम वनगमन, प्रथम भाग ३.०० ,,

पन्द्रहवीं ,, — ,, ,, द्वितीय भाग ३.०० ,,

चौंतीसवीं ,, — सती राजमती २.०० ,,

पैंतीसवीं ,, — सती मदनरेखा २.७५ ,,

(श्री अ० भा० साधुमार्गी जैन संघ द्वारा प्रकाशित)

छठी किरण — रुक्मिणी विवाह २.२५ पै०

सोलहवीं किरण — अंजना १.२५ ,,

[illegible] — शालिभद्र चरित	२ २५ पैं०
[illegible]	२.०० ”
[illegible] ज्योति	३ ०० ”
[illegible] मनन-अनुशीलन, प्रथम भाग	१ ०० ”
” ” ” द्वितीय भाग	१.०० ”

(श्री श्वे. साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था, बीकानेर द्वारा प्रकाशित)

जवाहर-विचार सार	२ ५० पैं०

(श्री जैन हितेच्छु श्रावक मडल, रतलाम द्वारा प्रकाशित)

सेट—१

श्री भगवती सूत्र पर व्याख्यान, भाग ३	४ ०० पैं०
” ” ” ” ४	
” ” ” ” ५	
” ” ” ” ६	

सेट—२

अनुकम्पा-विचार, भाग १	२ ०० पैं०
” ” ” २	

सेट—३

राजकोट के व्याख्यान, भाग १	२ ५० पैं०
” ” ” ” २	
” ” ” ” ३	

सेट—४

सम्यक्त्व-स्वरूप श्रावक के चार शिक्षाव्रत श्रावक के तीन गुणव्रत श्रावक का अस्तेयव्रत श्रावक का सत्यव्रत परिग्रह परिमाणव्रत	१.५० पै०

सेट—५

तीर्थङ्कर चरित्र, प्रथम भाग तीर्थङ्कर चरित्र, द्वितीय भाग सकडाल पुत्र सनाथ-अनाथ निर्णय श्वेताम्बर तेरह पथ	२ ५० पै०

नोट —पूरे सेट लेने पर ११ ०० मे प्राप्त होगे।

धर्म व्याख्या	१ २५ पै०
सुदर्शन-चरित्र	२ २५ "
श्री सेठ धन्ना चरित्र	१ ५० "

परिशिष्ट—३

हमारे अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

श्री गणेश स्मृति ग्रन्थमाला, बीकानेर

(परम पूज्य स्व आचार्य श्री गणेशीलाल जी म. सा. के व्याख्यान)

जैन संस्कृति का राजमार्ग	२ ५० पैसे
आत्म-दर्शन	१ ५० "
नवीनता के अनुगामी (सम्यक्ज्ञान मन्दिर; कलकत्ता का प्रकाशन)	१ २५ "
पूज्य गणेशाचार्य जीवन-चरित्र (अर्द्ध मूल्य)	५.०० "

(परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. के प्रवचन)

पावस-प्रवचन, प्रथम भाग (जयपुर)	२ ५० पैसे
" " द्वितीय भाग "	२ ५० "
" " तृतीय भाग "	३.५० "
" " चतुर्थ भाग "	५ ०० "
" " पाचवा भाग "	५ ५० "
ताप और तप (मन्दसौर)	२ ५० "
शाति के सोपान (ब्यावर)	३ २५ "
समता-दर्शन और व्यवहार	४०० "

आध्यात्मिक वैभव (बीकानेर)	१.५० पैसे
आध्यात्मिक आलोक (बीकानेर)	१.५० ,,

विविध :

समता जीवन	०.५० ,,
समता-दर्शन, एक दिग्दर्शन	०.५० ,,
सौन्दर्य दर्शन (कथा-संग्रह पाकेट बुक साइज)	२.०० ,,
श्रीमद् जवाहराचार्य, जीवन और व्यक्तित्व (पाकेट बुक साइज)	२.०० ,,
श्रीमद् जवाहराचार्य समाज	२.०० ,,

(परिनिर्वाण-वर्ष के उपलक्ष्य में संघ के विशेष प्रकाशन)

भगवान् महावीर. आधुनिक संदर्भ में (सम्पादक—डॉ० नरेन्द्र भानावत)	४०.००
Lord Mahavir & His Times (Dr. K. C Jain)	६०.००
Bhagwan Mahavir & His Relevence in Modern Times (Dr. N. Bhanawat & Dr. P S. Jain)	२५.००

संघ का मुखपत्र · श्रमणोपासक

वार्षिक शुल्क	१०.००
आजीवन सदस्यता	१५१.००

परिशिष्ट–४

श्रीमद् जवाहराचार्य सुगम पुस्तकमाला

प्रकाशन-योजना

१ श्रीमद् जवाहराचार्य जीवन और व्यक्तित्व
■ डॉ० नरेन्द्र भानावत, महावीर कोटिया

२ श्रीमद् जवाहराचार्य : धर्म
■ कन्हैयालाल लोढा

३ श्रीमद् जवाहराचार्य . समाज
■ ओंकार पारीक

४ श्रीमद् जवाहराचार्य राष्ट्रीयता
■ डॉ० इन्दरराज वैद

५ श्रीमद् जवाहराचार्य शिक्षा
■ महावीर कोटिया

६ श्रीमद् जवाहराचार्य नारी
■ डॉ० शान्ता भानावत

७ श्रीमद् जवाहराचार्य . साहित्य
■ डॉ० नरेन्द्र भानावत

८ श्रीमद् जवाहराचार्य सूक्तिया
■ डॉ० नरेन्द्र भानावत, कन्हैयालाल लोढा

परिशिष्ट–४

श्रीमद् जवाहराचार्य सुगम पुस्तकमाला

प्रकाशन-योजना

१ श्रीमद् जवाहराचार्य जीवन और व्यक्तित्व
■ डॉ० नरेन्द्र भानावत, महावीर कोटिया

२ श्रीमद् जवाहराचार्य : धर्म
■ कन्हैयालाल लोढा

३ श्रीमद् जवाहराचार्य समाज
■ ओंकार पारीक

४ श्रीमद् जवाहराचार्य राष्ट्रीयता
■ डॉ० इन्दरराज बैद

५. श्रीमद् जवाहराचार्य शिक्षा
■ महावीर कोटिया

६ श्रीमद् जवाहराचार्य · नारी
■ डॉ० शान्ता भानावत

७ श्रीमद् जवाहराचार्य साहित्य
■ डॉ० नरेन्द्र भानावत

८. श्रीमद् जवाहराचार्य सूक्तिया
■ डॉ० नरेन्द्र भानावत, कन्हैयालाल लोढ